ज्ञानामृत

जून, 1985
वर्ष 20 ❋ अंक 12 मूल्य 1.35

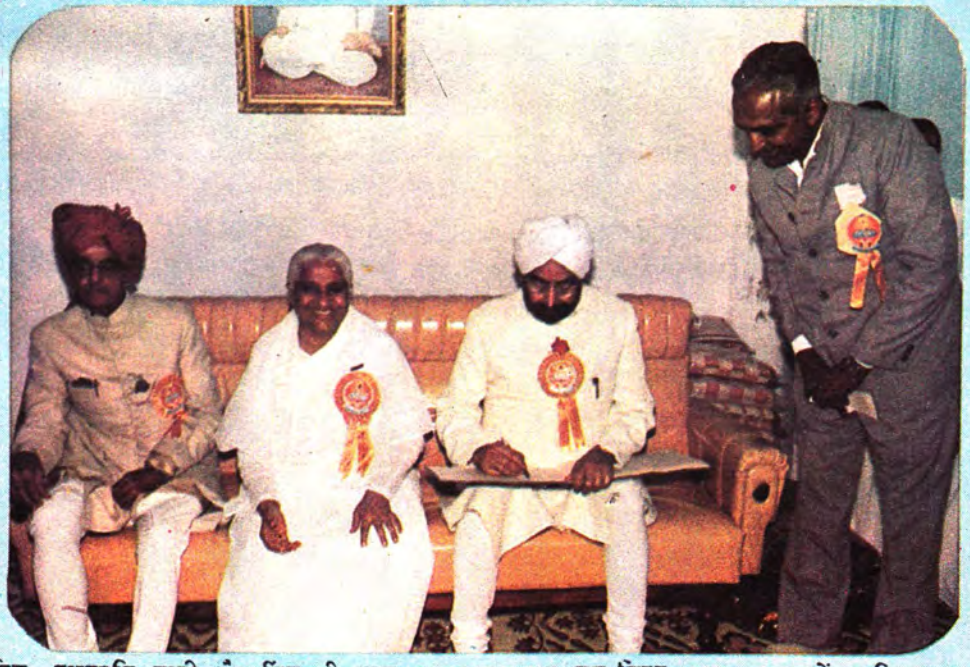

१. महामहिम, राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी तथा अन्य महानुभाव आबू स्थित पाण्डव भवन में शान्ति स्तम्भ के समक्ष परमात्मा की मधुर स्मृति में।

२. (बाएं से) महामहिम राज्यपाल राजस्थान भ्राता ओ० पी० मेहरा जी, ब्र० कु० ई० विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी। महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी (विजिटर बुक पर हस्ताक्षर करते हुए) तथा ब्र.कु.भ्राता रमेश जी।

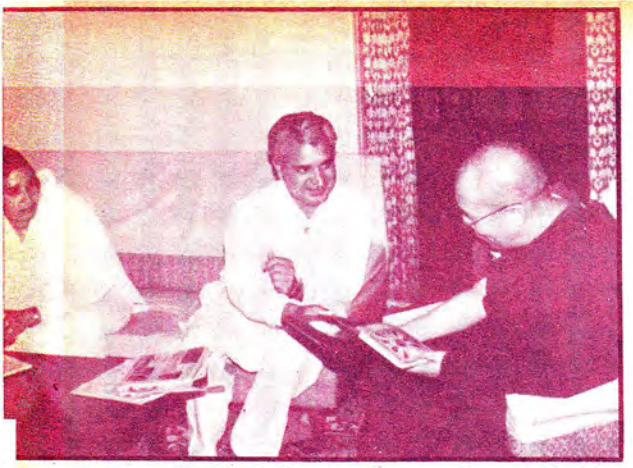

ब्र० कु० अमीर चन्द जी आदरणीय दलाई लामा जी को ईश्वरीई सौगात देते हुए।

नई दिल्ली राजयोग भवन में संयुक्त राष्ट्र संघ के सहायक महासचिव भ्राता वी० ए० युस्टिनव के पधारने पर स्वागत समारोह में वे अपने उद्गार प्रकट कर रहे हैं।

इन्दौर-न्यु पलासिया स्थित ओमशान्ति भवन के परिसर में एन० सी० सी० के महानिदेशक लेफ्टिनेन्ट जनरल भ्राता एस० एल० मल्होत्रा जी वृक्षारोपण करते हुए।

मुर्बाड (महाराष्ट्र) सेवा स्थान पर भ्राता शरद पवार को ब्र० कु० पुष्पा श्रीकृष्ण का चित्र सौगात दे रही हैं।

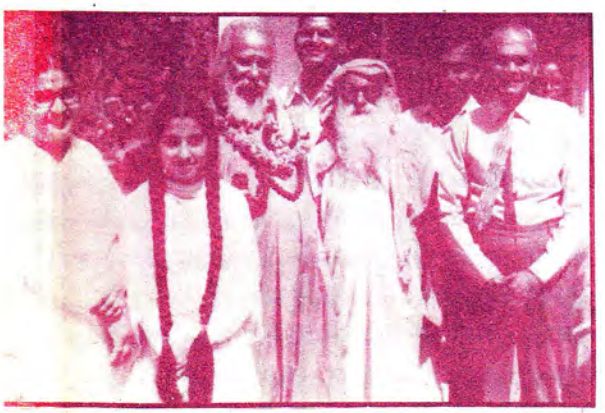

देहरादून सेवा केन्द्र पर माननीय वेदव्यासानन्द सरस्वतीजी, अध्यक्ष गीता आश्रम, ऋषिकेश, ब्र०कु० प्रेमलता तथा अन्य भाई बहनें।

पश्चिम विहार (नई दिल्ली) सेवा केन्द्र का उद्घाटन दृश्य। ब्र० कु० दादी जानकी, ब्र० कु० हृदयमोहिनी, ब्र० कु० शुक्ला तथा अन्य उद्घाटन पश्चात् शिव बाबा की याद मे।

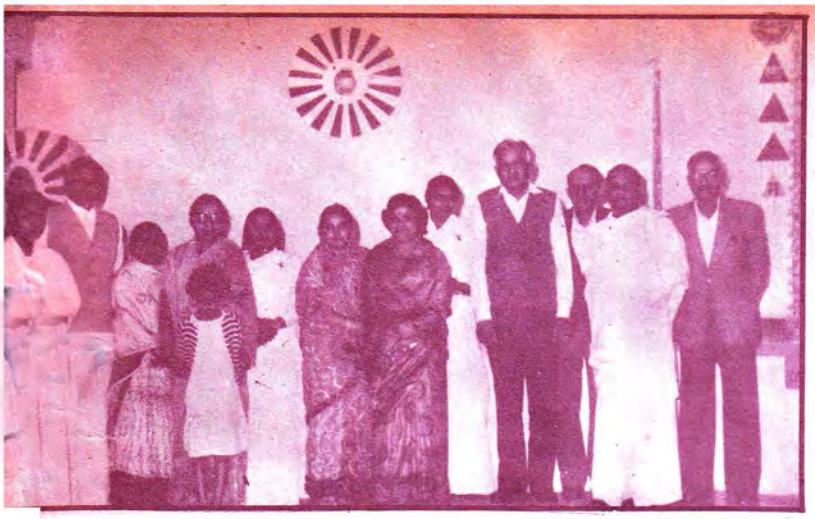

भोपाल में नवनिर्मित राजयोग भवन में भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्ज़ के ग्रुप जनरल मैनेजर भ्राता जी० पी० डोडेजा धर्म पत्नी सहित पधारे। साथ में पी० डब्लयु० डी० के चीफ इन्जीनियर भ्राता के० एस० इनामदार तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहनों के साथ चित्र में खड़े हैं।

कटक (कालेज स्कवायर) स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय में ब्र० कु० मंजू स्वामी चिनमियानन्द जी को चित्रों की व्याख्या कर रही हैं।

चित्र में मोदीनगर में राजयोग भवन के उद्घाटन अवसर पर (बाएं से) ब्र० कु० निर्मलाशान्ता जी, ब्र० कु० दादी जानकी जी, ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी, बहन गिन्नी-देवी मोदी जी, ब्र० कु० मोहिनी जी तथा माइक पर बहन गायत्री मोदी जी।

भद्रावती में विश्वशान्ति आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० हृदयपुष्पा जी उद्घाटन भाषणा देते हुए।

भंडारा में युवा आध्यात्मिक जागृति सम्मेलन के अन्तर्गत

अशोक विहार (दिल्ली) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उदघाटन दृश्य। ब्र० क० हृदयमोहिनी जी, तथा अन्य ब्र० कु० भाई-बहनें चित्र में खड़े हैं।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

आबू स्थित ओमशान्ति भवन राष्ट्रपति जी क्षेत्रीय इंचार्ज भाई बहिनों से मिलते हुए।

रोम में ब्र० कु० दादी जानकी, सह-मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० ई० विश्व-विद्यालय तथा ब्र० कु० जयन्ति पोप से मिलते हुए तथा उसे ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

आबू पर्वत पर ओमशान्ति भवन में 'युवा महोत्सव' के उद्घाटन अवसर पर भारत के राष्ट्रपति जी के आबू पधारने पर ब्र० कु० जगदीश भाई जी अभिनन्दन पत्र पढ़ते हुए।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ	क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	माउंट आबू में राष्ट्रपति द्वारा 'यूथ फेस्टिवल' का उद्घाटन	१	८.	गीत	१७
२.	स्मृति और विस्मृति (सम्पादकीय)	२	९.	वाचालो लभते नाशम् (कहानी)	१८
३.	सुख का साक्षात्कार	५	१०.	युवको ! आगे आओ (कविता)	२०
४.	सुनो युवा	७	११.	सभी समस्याओं का हल ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा सम्भव	२१
५.	युवा-क्रान्ति लायेगी विश्व में शान्ति	९	१२.	सूक्ष्म पुरुषार्थ	२४
६.	सहजयोगी	१३	१३.	शिक्षा की अध्यात्म अभिमुखता	२५
७.	संगठन में एकता	१४	१४.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	२९

माउंट आबू में राष्ट्रपति द्वारा 'यूथ फैस्टिवल' का उद्घाटन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष में आयोजित "यूथ फैस्टिवल" का उद्घाटन करते हुए महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि "मुझे जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि यह संस्था आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा विश्व-परिवर्तन का महान कार्य पिछले ५० वर्षों से कर रही है और संयम, सेवा, सिमरण और भाईचारा का उपदेश देती है। यह संस्था भारत में एकता स्थापित करने का जो महान कार्य कर रही है वह भी अति प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि दुनिया की कोई भी ताकत हमारी एकता को नहीं तोड़ सकती है और हजारों युवक भारत के कोने-कोने में एकता का सन्देश देने के लिए जो पद यात्रा कर रहे हैं उससे लोगों के मन से अवश्य दुर्भावना मिटेगी। हजारों पद यात्रियों ने जो अपना लक्ष्य रखा है कि वे शराब, धूम्रपान, नशीले पदार्थों के सेवन आदि से भारत की आम जनता को तथा ग्रामीण लोगों को विशेष तौर से छुटकारा दिलाने का प्रयत्न करेंगे उसमें वे अवश्य सफल होंगे ऐसी मेरी उनके प्रति शुभ भावना है और वे बधाई के पात्र हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि इस महान कार्य में सभी धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक संस्थाएं भी अपना पूर्ण सहयोग देंगी।

उन्होंने आगे कहा कि सभी महापुरुषों, धार्मिक नेताओं, ऋषि मुनियों ने आपस में स्नेह पूर्वक रहने की ही शिक्षा दी है ना कि लड़ने झगड़ने की— अतः हमें चाहिए कि इस संसार रूपी मेले में मिल जुलकर रहें और स्वयं को त्यागी-तपस्वी व परोपकारी बनाते हुए खुश रहें और अन्य आत्माओं को भी खुशी बाँटते रहें तथा काम क्रोधादि पाँच विकारों का त्याग, दिव्य गुणों की धारणा करें ताकि हमारा देश अति महान बन सके।

राजस्थान के राज्यपाल ओ० पी० मेहरा ने इस कार्यक्रम में भाग लेने की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यहाँ पर जो "यूथ फैस्टिवल" का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के अन्तर्गत किया गया है, बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा और विश्व के परिवर्तन में सहायक सिद्ध होगा। शराब, धूम्रपान व नशीले पदार्थों का सेवन छोड़ने व अन्य बुराइयों को त्यागने वा दूसरों से त्याग कराने की जो प्रतिज्ञा यहाँ के हजारों युवकों ने की है वह भी सराहनीय है और वे सभी बधाई के पात्र हैं।

राष्ट्रीय एकता वा भ्रातृत्व की भावना की वर्तमान में बहुत आवश्यकता है और वह तभी हो सकती है जब हम सभी अपने को एक परमपिता परमात्मा की सन्तान समझेंगे। इस दिशा में यह संस्था

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सम्पादकीय

स्मृति और विस्मृति

यदि हम आध्यात्मिक पुरुषार्थ के विधि-विधानों पर विचार करें तो हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि इसमें 'स्मृति' और 'विस्मृति' का अतुल महत्व है। हमारे पुरुषार्थ का प्रारम्भ ही 'आत्मिक स्मृति' से होता है। यदि हमें इस ज्ञान-बिन्दु की विस्मृति हो जाती है कि 'हम आत्माएँ हैं', तो देहाभिमान के कारण सभी मनोविकारों की उत्पत्ति होती है और उसके कारण कर्म 'विकर्म' बन जाते हैं। इस एक बात से भी हमारे पुरुषार्थ में 'स्मृति' और 'विस्मृति' का महत्व स्पष्ट हो जाता है।

फिर आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर आगे बढ़ने के लिये सबसे बड़ा पुरुषार्थ है "ईश्वरीय स्मृति"। उस स्मृति ही से संस्कार बदलते हैं और विकर्म दग्ध होते हैं। उससे ही इस जीवन में सम्पूर्णता आती है और भविष्य में भी जीवन-मुक्ति का लाभ होता है। यदि परमपिता परमात्मा की विस्मृति हो जाती है तो आत्मा में आध्यात्मिक शक्ति और दिव्य प्रकाश का संचार ही रुक जाता है और आध्यात्मिक विकास होना भी बन्द-सा हो जाता है।

इस प्रकार, हमारे जीवन में जो परीक्षाएँ आ उपस्थित होती हैं अथवा जो समस्याएँ या संकट सामने आते हैं, उस समय परमात्मा द्वारा प्राप्त श्रेष्ठ मत की स्मृति बनी रहना जरूरी है। यदि कार्य-क्षेत्र और व्यवहार-क्षेत्र में, परमपिता द्वारा बताई दिव्य धारणाएँ या श्रीमत विस्मृत हो जाती हैं तो भी ऐसी परिस्थितियों को पार न कर पाने से हमारा जीवन कमल पुष्प के समान अथवा दिव्य नहीं बन पाता और हम माया को परास्त कर विजयी बनने में सफल नहीं हो पाते। यदि हमें ज्ञान-बिन्दुओं की विस्मृति हो जाती है तो अज्ञान-जनित संकल्पों से युद्ध करने में हम असमर्थ हो जाते हैं और माया के आक्रमणों से हताहत हो जाते हैं। यदि समय पर हमें ईश्वरीय ज्ञान के उपयुक्त महावाक्य की शक्तिशाली स्मृति आ जाती है तो हम माया के तीव्र प्रहारों का मुकाबला करने में सफल होते हैं।

हम प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा अपनाये गये परम-पिता शिव के धर्म-के-बच्चे हैं, हमारा यह जीवन शुद्ध ब्राह्मण जीवन है, हम नये, पवित्र, सतयुगी, प्रेममय समाज के और दिव्य मर्यादा वाली सृष्टि के स्थापक हैं—इसको विस्मृति के परिणाम से हमारे कर्म पुनः लौकिक, कलह-क्लेश और अनबन से युक्त हो जाते हैं। हमने अनेक वर्षों से आध्यात्मिक पुरुषार्थ करने वालों के जीवन में देखा है कि आत्मिक और अलौकिक सम्बन्ध को विस्मृति के कारण उनके जीवन से मर्यादा मिट जाती है, स्नेह निकल जाता है और 'मेरे'-'तेरे' की भावना आ जाती है जिसके परिणाम स्वरूप अनेकों को आन्त-रिक पीड़ा का अनुभव होता है।

हमने अपने इस पुरुषार्थी जीवन में देखा है कि 'स्मृति' और विस्मृति' ही उन्नति और पतन के प्रदायक हैं। कई आत्माओं ने अपना जीवन परम-पिता परमात्मा को समर्पित किया परन्तु कुछ समय के बाद वे अपने इस वचन को भी विस्मृत कर बैठे। उन्होंने किसी कार्य को छोड़ने से इन्कार कर दिया या जो कार्य उन्हें दिया गया, उसे करने से इन्कार कर दिया। गोया उन्हें इस बात की विस्मृति हो गयी कि अब इस तन-मन पर हमारा अधिकार नहीं रहा क्योंकि हम तो इसे परमपिता के हाथों सौंप चुके हैं। इस विस्मृति से वे अपने से बड़ों के परामर्श, सुझाव, शिक्षा या समालोचना को भी न सुनने या उसे ठुकराने को उद्यत हो गये और मर्यादा को भंग करने से भी न सकुचाये। परिणाम यह हुआ कि मन-मत, पर-मत या अहम् भाव को वे पालने लगे और आगे चलकर इसके नतीजे

हानिकारक सिद्ध हुए। "मैं कौन हूँ?", "हमारे साथ व्यवहार में आने वाले दूसरे कौन हैं?", "बाबा ने अपने मुखारविन्द से उनको क्या स्थान दिया है?", "हमारे बीच मान्यता और मर्यादा क्या होनी चाहिये?", "हमें एक-दूसरे के अनुभवों से लाभ उठाकर आगे कैसे बढ़ना चाहिये?", "प्यारे शिव बाबा की सेवा में अधिकाधिक गति कैसे लानी चाहिये?", "जिस सेवा के लिए हमने स्वयं को प्रभु समर्पित किया है, उसके लिये हमें तैयार रहना चाहिये"—इन सबकी विस्मृति हो जाने से संगठन को हम कमजोर बनाने और अपने पुराने संस्कारों में अटक जाने के निमित्त बनते हैं।

स्मृति और विस्मृति का एक और तरह भी हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। कई बार ऐसा होता है कि हमें जिन बातों की स्मृति होनी चाहिये, उनको तो हम विस्मृत कर देते हैं और जिनकी हमें विस्मृति होनी चाहिये, उनको हम अपनी स्मृति में धारण कर लेते हैं। इससे भी हमारे पुरुषार्थ में, सेवा क्षेत्र में, दैवी संगठन में स्नेह बनाये रखने में बाधा उपस्थित होती है। दो व्यक्तियों के बीच यदि कोई दुःखद व्यवहार हुआ तो वे उसकी ही स्थायी स्मृति बना लेने से स्वयं भी रुक जाते हैं और कार्य में भी गति-शून्यता ला देते हैं। जो घटनाएँ घटती हैं, वे हमें अनुभवी बनाती हैं और आगे के लिये कार्य को सुचारु रूप से करने के लिये कुछ शिक्षा रूपी मोती दे जाती हैं, परन्तु यदि उनके दुःखद अंश को स्थायी स्थान दे देते हैं तो दिव्यता के उत्कर्ष में रुकावट आती है। वास्तव में हमें उनके कटु भाव को विस्मृत कर, उसके निष्कर्षों को स्मृति में रखना चाहिये।

श्रुति और स्मृति

ऊपर हमने 'स्मृति' और 'विस्मृति' के कुछेक पहलुओं पर प्रकाश डाला है। वास्तव में जो ईश्वरीय ज्ञान हम सुनते हैं, वह 'श्रुति' है और ईश्वरीय याद तथा श्रीमत की याद ही 'स्मृति' है। गोया हमारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म 'श्रुति' और 'स्मृति' पर आधारित है। परन्तु समयान्तर में लोगों ने वेदों को 'श्रुति' और मन आदि द्वारा बताई गयी आचार-संहिता या व्यवहार-नियमावली को 'स्मृति' कहकर इन्हें ही आदि सनातन धर्म की नींव बताया। सत्यता तो यह है कि 'वेद' शब्द 'विद्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है—'ज्ञान' अथवा 'जानना'। हम प्रतिदिन जो ईश्वरीय ज्ञान सुनते हैं, वह 'वेद' है जिसके चार विषय हैं। अर्थात प्रतिदिन हम चार प्रकार की बातें सुनते हैं—(१) आत्मा और परमात्मा विषयक सिद्धान्त, (२) योग के सिद्धान्त और विधि-विधान, (३) दिव्य व्यवहार और आचार के सिद्धान्त और (४) समाज-कल्याण के सिद्धान्त तथा उसका क्रियात्मक पक्ष। ये चारों मिलाकर 'श्रुति' हैं। ये हमने प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से सुनी हैं। इसी को लेकर कई लोगों ने समयान्तर में कह दिया कि ब्रह्मा ने चार वेद दिये और चित्रकारों ने ब्रह्मा के चार हाथ बना कर उनमें चार वेद दिखा दिये। फिर हमें जो श्रीमत मिली, उसकी हम स्मृति बनाये रखते हैं ताकि वह हमारे व्यवहार में उतर आये। उसी को लेकर युगान्तर में अन्य स्मृतियाँ बना डाली गयीं।

अब हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि हम स्मृति के स्थान पर विस्मृति और विस्मृति के स्थान पर स्मृति का उलटा प्रयोग न करें। अर्थात कहीं ऐसा न हो कि जिन बातों को भुलाने से हमारा कल्याण हो उन्हें तो हम स्मृति में रख लें और जिन्हें हमें स्मृति में रखना चाहिये, उन्हें कहीं हम भुला डालें। स्मृति और विस्मृति की योग्यता का सही उपयोग ही सफलता को देने वाला और इनका उलटा प्रयोग हानि करने वाला होता है—यह हम भली भाँति समझ लें।

—जगदीश

माउंट आबू में राष्ट्रपति द्वारा.....

(पृष्ठ १ का शेष)

जो कार्य कर रही है वह भी अति सराहनीय है।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के मुख्य प्रवक्ता राजयोगी ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र ने १५०० सेवाकेन्द्रों के लाखों ब्रह्माकुमार एवं ब्रह्माकुमारी भाई-बहिनों का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रपति महोदय एवं राज्यपाल महोदय का हार्दिक स्वागत कुछेक उर्दू के प्रेरणादायक शेर (कविता) पढ़कर किया तथा उन्हें अभिनन्दन पत्र भी प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि हमें पूर्ण विश्वास है कि आप जैसे महान राष्ट्रपति को पाकर भारत का सर्वांगीण विकास होगा और भारत विश्व के सभी देशों का नेतृत्व करेगा। उन्होंने ५० देशों में स्थित लगभग १०० सेवाकेन्द्रों की प्रशासिका दादी जानकी जी का शुभ सन्देश भी पढ़कर सुनाया और महामहिम राष्ट्रपति जी को राजयोग अभ्यास द्वारा अधिक अनुभूति प्राप्त करने के लिए समय निकालने का भी आग्रह किया।

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणी जी ने राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए कहा कि शान्ति, प्रेम, आनंद की शक्ति द्वारा ही भारत पुनः देवभूमि बन सकता है। शान्ति-प्रेम, आनंद व शक्ति के सागर परमपिता परमात्मा शिव यह महान कार्य इस संस्था के १५०० सेवाकेन्द्रों के लाखों भाई बहनों द्वारा करवा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि आज का दिन देश ही नहीं विश्व के इतिहास में बहुत महत्व पूर्ण दिवस है जबकि युवा वर्ग देश में एक नई जागृति लाने और अनेक सामाजिक बुराइयों से छुटकारा दिलाने की प्रतिज्ञा कर रहा है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय इस दिशा में आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा उन्हें नई दिशा प्रदान कर रहा है। अब युवा वर्ग चरित्र निर्माण और राष्ट्रीय एकता और जातीय सद्भावना विषयक कार्य करके एक नया उदाहरण प्रस्तुत करेगा।

नई दिल्ली से पधारी हुई राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी आशा ने यूथ फैस्टिवल की रिपोर्ट एवं संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यों का विवरण देते हुए बताया कि इस संस्था के हजारों युवकों ने देश व विश्व में "आध्यात्मिक क्रान्ति" लाने की प्रतिज्ञा की है तथा अपने व्यवहारिक जीवन से बुराइयों का परित्याग करके अन्य युवकों के सामने अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने आगे बताया कि अनेक कार्यक्रमों के साथ-साथ हजारों युवक भारत के सैकड़ों हजारों ग्रामों में पदयात्रा करेंगे। उनमें से एक युवक दल दक्षिण में कन्याकुमारी से रवाना होगा। अनेक प्रदेशों में से होती हुई यात्रा के दौरान वह मार्गवर्ती ग्रामों में सभाओं, प्रदर्शनियों, प्रोजेक्टर-स्लाईड-प्रदर्शनी, राजयोग शिविरों के द्वारा वह ग्रामीण जनता को धूम्रपान, मद्यपान, नशीले पदार्थों के सेवन, हिंसा, दहेज तथा बाल-विवाह आदि जैसी कुप्रथाओं से मुक्त होकर पवित्र एवं शान्त जीवन जीने की प्रेरणा देगा। और आत्म-नियन्त्रण एवं संयम के द्वारा सन्तति निरोध के लिए भी सुझाव देगा। जो ग्रामवासी बुरी आदतों तथा व्यसनों को स्वेच्छा से छोड़ना चाहेंगे वे एक प्रतिज्ञा पत्र भरेंगे।

इस प्रकार अन्य युवा ग्रुप पश्चिम में सोमनाथ और बम्बई, पूर्व में कलकत्ता तथा उत्तर में अमृतसर से और इसके अतिरिक्त माउण्ट आबू से भी पद यात्रा करते हुए २४ अक्टूबर १९८५ को देहली पहुँचेंगे। एक युवा-दल जो साइकिलों पर बेलगान से रवाना होगा वह भी इन सभी की भाँति ग्रामों की सामाजिक एवं नैतिक जागृति का कार्य करता हुआ देहली पहुँचेगा।

इस प्रकार २४ अक्टूबर को देहली में एक बहुत बड़ा युवा समारोह होगा जिसमें देहली तथा आसपास के युवक-युवतियाँ भी सम्मिलित होंगे। इस विशाल समारोह को संभवता राष्ट्र के नेता प्रधानमंत्री तथा युवा और खेल मन्त्रालय के मन्त्री सम्बोधित करेंगे।

युवा मार्च में भाग लेनेवाले युवकों को राष्ट्रपति महोदय ने कलश प्रदान किया तथा मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी ने उन्हें सभी को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रतीक "शिव ध्वज" भेंट किया। ○

"सुख का साक्षात्कार"

ब्र० कु० उर्मिला कुरुक्षेत्र

"गहनों की चकाचौंध में खोई, सुनहरी जंजीरों में जकड़ी ए नारी ! तू अपनी अन्तरात्मा की आवाज मत भूल जो स्वतन्त्रता की पुकार कर रही है। अपनी गोदी में किलकारियाँ मारते बच्चे का मुख देख-देख खुशी से झूमने वाली तू अपने मन की सूक्ष्म धड़कनों को सुन जो तुम्हें जगतमाता के रूप में पूज्या देखना चाहती हैं। घर और परिवार की साज-सजावट में व्यस्त हुई तू अपने अन्तरमन की आवाज को उपेक्षित मत कर जो बार-बार कह रहा है तू केवल परिवार कल्याणी ही नहीं, विश्व कल्याणी है।"

एक तरफ मक्खन से कोमल और दूसरी तरफ मानस के अन्तः तारों को झंकृत कर देने की शक्ति रखने वाले ये शब्द मेरे कानों में गूँजते रहे। दुग्ध धवल कपड़ों में चमचमाता चान्दसम चेहरा मेरी आँखों के सामने स्थिर हो गया। जैसे बहते पानी को बाँध दिया गया हो। विचार शक्ति एकत्रीभूत होकर उस पर केन्द्रित हो गई। मैंने इस चित्र और इसके साथ बँधें क्रान्तिकारी शब्दों से अपना पीछा छुड़ाने के लिए सिर को थोड़ा झटका। पर स्थिर पानी में पत्थर फेंकने से उठी लहरों की तरह अनेक विचार तरंग उठाता हुआ वह चित्र पर्दे पर हिल मात्र गया, हटा नहीं। कितना प्रकाश, कितना नूर कितना ओज था उस चेहरे पर ! मानो काली यामिनी के दामन में चन्द्रमा उदित हो गया हो। कितने लोग एकत्रित थे वहाँ !

स्त्री-पुरुष बाल वृद्ध सभी जड़ हुए उसे सुन रहे थे। सफेद बालों और चश्मा के नीचे धँसी हुई आँखों वाले नौजवान भी भीड़ में वृद्धों का साथ दे रहे थे। पर वह चेहरा सबसे अलग था। मुझे लगा यह बोल कम रही हैं और शीतल नयनों से तपती मानवता पर शीतलता बरसा रही हैं। एक-एक शब्द तर्क की कसौटी पर खरा उतर रहा था। शायद उसने मुझे देखा ? नहीं, इतनी भीड़ में कहाँ पहचान पाई होंगी। अब तो शायद सामने चली जाऊँ तो भी नहीं पहचान सकेगी। पहचाने भी कैसे ? कितना परिवर्तन आ गया है मुझमें। मैं उठकर शीशा निहारने लगती हूँ। गुजरते समय ने अनेक रेखाएँ खींच दी हैं चेहरे पर। लेकिन समय की मार से सर्वथा सुरक्षित है उसका चेहरा वही जवानी वाली चमक और दमक। वह समय से नहीं हारी समय उससे हार गया। मुझे लगा मेरे चेहरे की झुर्रियाँ, मुख का पीलापन और आँखों के तले के काले गड्डे आज कुछ और गहरा गये हैं। आँखों में उदासी है जिनमें कुछ नहीं बहुत कुछ खो देने का अहसास और कुछ पा लेने की याचना है और उसकी आँखों में कुछ नहीं वरन् सब कुछ दे देने की चमक। सबकी तमन्नाएँ पूर्ण करने की दृढ़ता और विश्वास।

कितने सालों पहले कितनी दोस्ती थी हमारी। एक साथ खाना पीना उठना बैठना। एक दिन स्कूल में कोई नहीं जाता तो घर में ४-५ घन्टे इकट्ठे बैठकर उस कमी को पूरा करना गली वाले कहते थे हमारी गली में ये दो फूल हैं। मैं अत्यन्त सुन्दर और वह पढ़ाई में तेज। सुन्दर वह भी थी पर मैं अपूर्व सुन्दर थी और वह मात्र सुन्दर। समय ने मोड़ खाया देह और देह के रसों में खोई मुझ अभागिन को पोलिश किया हुआ लोहा मिल गया अर्थात् मेरी शादी हो गई और वह पढ़ती रही। उसके बाद मैं अपनी दुनिया में व्यस्त हो गई उसके बारे में कुछ पता नहीं रहा कहाँ गई क्या किया। यह बात वो अक्सर किया करती थी कि शादी नहीं करूँगी, समाज सेवा करूँगी। पर मैं उसकी बातों को कोरा बचपना मानकर हँस देती थी। और कहती थी "जिसने शादी नहीं की उसने कुछ भी नहीं किया।" वह हमेशा एक ही जवाब देती थी—"तुम एक दो बच्चों की माँ बनकर सन्तुष्ट हो सकती हो, मुझे तो लाखों और करोड़ों बच्चे चाहिए माँ कहने के लिए।" उसके बाद हम अलग-अलग हो गए थे। दोस्ती और दोस्ती की

बातें दोनों ही विस्मृति के गहरे गर्त में खो गई। आज बाजार आते समय अचानक एकत्रित जन-समूह को देखकर ठिठक गई। किसी ने बताया ब्रह्माकुमारी बहनों का कोई प्रोग्राम है यह तो मैंने भी सुना था यहाँ चौक बाजार में इनका कोई आश्रम है पर इनका प्रोग्राम पहली बार देख रही थी। सुना है ये बहनें बड़ा सात्विक जीवन जीती हैं और सफेद कपड़े पहनती हैं···। मैं यह सब सोच रही थी कि सामने मंच पर वह दिव्य कान्ति आ पधारी। मेरी आँखें चौंधिया गई। मैंने आँखों को मला। लगा चेहरा जाना-पहचाना है और फिर विस्मति के गर्त में छिपी एक-एक पर्त उघड़ती गई। मैं जोर से चिल्ला पड़ी "ये तो वही अपनी शशी है, वही जो कभी मेरा ही एक हिस्सा थी।" मुन्ना जग गया है, उसे लोरियाँ देकर सुलाने लगी हूँ। फिर से वही शब्द कानों में गूँज गए हैं—"तू एक दो की माँ नहीं वरन् जगतमाता है।" सचमुच उसने जो कुछ कहा था वह कर दिया। फल दोनों थे पर वह तो भगवान के गले की माला में पिरोया गया और यह गलियों में पैरों के नीचे आकर कुचला गया। घर बाहर की समस्यायें, चिन्ताय, जिम्मेवारियों में बँटा जीवन टुकड़े-टुकड़े हो गया। फूल की पत्तियाँ-पत्तियाँ बिखर गईं। जिस दिन घर में बहू बनकर आई थी पास से ही एक कॉमेन्ट सुनाई दिया—"बच्चे पैदा करने की मशीन आ गई है।" सुनकर बुरा लगा। आत्मसम्मान को चोट भी लगी। पर सेमल वक्ष के फूल की चकाचौंध में खोए तोते की तरह से असलियत नहीं पहचान पाई। मन ने जोर मारा तो यह कहकर समझा लिया—"सभी ने ऐसा ही किया है। नारी तो बनी ही इसके लिए है। माँ बहन, दादी, नानी सभी ने यही तो किया है, मैं भी उनका अनुकरण कर रही हूँ, इसके सिवा चारा भी क्या है ?" पर आज साक्षात देख लिया जो सच्चे स्वमान से भर-पूर होते हैं, वह समाज की दुःखदायी मान्यताओं से अपने को अछता रख लेते हैं, अपने लिए सुख शान्ति का खजाना ढूँढ़ ही लेते हैं। कितनी सुखी होगी वह ! कितनी शान्ति होगी उसके जीवन में ! न बच्चों की चिल्ल पों, न पति की चिड़-चिड़ाहट, न सास ननद की खिट-पिट, न नींद हराम करने वाली प्रतिष्ठा की चाह, न दुनिया की मान्यताओं का डर और न समाज से डरकर चुपचाप ठीक गलत सोचे बिना समर्पण करने वाली कायरता। हाँ, इसे मैं कायरता ही कहूँगी। समाज के डर से अपनी उच्च भावनाओं, उच्च आकांक्षाओं का गला घोंटना, समाज सेवा में मुख मोड़ना कायरता ही तो है। समाज रास्ते में रोड़े कभी नहीं अटकाता। विरोध करके मात्र परीक्षा लेना चाहता है कि तुम अपनी मंजिल पर पहुँचने के काबिल भी हो या रास्ते में ही पीठ दिखाकर भागने वाली। उसने परीक्षा को पार कर लिया। समाज से योग्यता प्रमाण पत्र भी ले लिया। मेरे जैसे जो कभी उसकी बातों पर हँसते थे आज वाह-वाही कर रहे हैं।

मुझ लगा उसके व्यक्तित्व में मुझे सम्पूर्ण सुख का साक्षात्कार हो गया है। भगवान की गोद में पलने वाला निर्मल, मुक्त जीवन ! उसके सुख की कल्पना करते-करते एक सुख की लहर मेरे सारे अस्तित्व में दौड़ गई, उसके शान्त जीवन की कल्पना ने मुझे शान्ति की अनुभूति करा दी। मन में विचार चला अगर उसके बारे में सोचने से, कल्पना करने से इतना सुख, इतनी शान्ति मिल रही है तो मिलने पर तो जाने क्या मिल जाएगा। क्या हुआ अगर जीवन का इतना हिस्सा अन्धेरे में बीत गया अभी भी तो प्रकाश को अपनाया जा सकता है। मुझे उससे मिलना चाहिए। मैंने जीवन सुख के लिए लिया है, परमात्मा बाप का प्यार पाने के लिए, जीवन पुष्प को उसको अर्पित करने के लिए, यूँ ही खोने के लिए नहीं। भले देर से आई, पर मुझे समझ आ गई है, अब और समय नष्ट नहीं करूँगी। अभी तो सुख का साक्षात्कार मात्र हुआ है, उसे सम्पूर्ण पाना भी तो है। और मैं शहर के ब्रह्माकुमारी आश्रम की ओर दौड़ पड़ी उस प्रकाश पुञ्ज से प्रकाशित होने के लिए। □

सुनो युवा

ब्र० कु० राजेन्द्र ललावत, उज्जैन

सुनो युवा, आज सारा ही संसार समस्याओं का सागर बन गया है। समस्याओं से जूझना ही आज के मानव की नियति बन गई है। विभिन्न प्रकार की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक समस्याऐं संसार के सामने मुँह उठाये खड़ी हैं। और तुम ! तुम क्या कर रहे हो—विश्वविद्यालयों में प्रश्न पत्रों का बहिष्कार, नारे, तोड़-फोड़ आन्दोलन, बसों-रेलों और औद्योगिक संस्थानों में आगजनी, पुलिस से संघर्ष, मादक द्रव्यों का सेवन या फिर मुक्त यौनाचार में लिप्त हो। ओह युवा ! यह तुम किस प्रकार के कार्य-कलापों में अपनी युवावस्था को, जो कि तुम्हारे जीवन की स्वर्णिम अवस्था है, उसे व्यर्थ ही गँवा रहे हो। नहीं युवा नहीं, तुम्हें अपने आपको इस दलदल से निकालना ही होगा, क्योंकि—क्योंकि वक्त तुम्हें पुकार रहा है, वक्त तुम्हारा आह्वान कर रहा है, वक्त तुम्हारी आवश्यकता का इज़हार कर रहा है···कि आओ युवा आओ···समस्याओं का समाधान करो, विश्व को नैतिकता के शिखर पर ले जाओ, दुनिया से बुराइयों का संहार करो।

सुनो युवा, पता नहीं क्यों तुम अपनी असीमित शक्तियों का प्रयोग गलत विध्वंसकारी कार्यों में कर रहे हो, तुम्हें तो अपनी अवस्था एवं शक्तियों का उपयोग समाज, देश एवं विश्व का नैतिक उत्थान करने एवं दिव्य गुणों के विकास के लिये करना चाहिए था। लेकिन अफसोस कि तुमने ऐसा नहीं किया। खैर कोई बात नहीं अभी भी वक्त है। सुबह का भूला यदि शाम को घर लौट आता है, तो उसे भूला नहीं कहते। इसलिये हे युवा ! पतित एवं विध्वंसकारी कार्यों से अपने कदम खींचकर पावन एवं विश्व नव-निर्माण के कार्यों में अपने कदम मिलाओ। पवित्रता एवं शान्ति की किरणें जग में फैलाओ। तुम···तुम केवल यह याद रखो कि संयम और नियम ही जीवन की शोभा है।

सुनो युवा, घबराओ नहीं, इतिहास के पन्ने पलट कर देखो। तुम देखोगे कि गांधी, नेहरू, सुभाष, विवेकानन्द, महावीर आदि जितने भी महान पुरुष हुए हैं, वे सभी युवावस्था में ही ऐसा कार्य कर चुके थे कि आज भी संसार उन्हें आदर के साथ याद करता है। अतः हे युवा आज जबकि विश्व में भारी अशान्ति है, शोषण है, हिंसा है, तनाव है, अनैतिकता है, विकराल समस्यायें हैं—ऐसे समय एवं वातावरण में तुम्हें ही गांधी, नेहरू, सुभाष और विवेकानन्द आदि बनकर उनका समाधान करना है। और निश्चय ही यदि इस कार्य में युवा तुम सहयोगी बन जाओ, तो सारी समस्याओं का समाधान होकर ही रहेगा, विश्व श्रेष्ठाचारी बन कर ही रहेगा, पृथ्वी से बुराइयों का संहार होकर ही रहेगा, नैतिकता आकर ही रहेगी।

सुनो युवा, युवावस्था ही जीवन का वह भाग है, जबकि मनुष्य में उमंग और उत्साह होता है और उसके अन्दर कुछ कर दिखाने के जज़बात होते हैं। अतः हे युवा, तुम उलटे या विध्वंसकारी कार्य कर दिखाने के बजाय अच्छे या विश्व नवनिर्माण का कार्य करके दिखाओ। तुम···तुम वह करके दिखाओ, जिसे दुनिया असंभव कहती है, तुम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया लाकर दिखाओ। तुम काम, क्रोध, लोभ-मोह, अहंकार आदि विकारों (बुराइयों) के जाल में नहीं फंसो, तुम उन्हें अपना शत्रु नहीं समझो, बल्कि हे युवा तुम इन पाँच शत्रुओं को अपना मित्र बनो लो। काम को ऊर्जा (शक्ति) में बदलो, क्रोध को क्रान्ति में बदलो, लोभ को स्वहितार्थ नहीं परमार्थ में बदलो, मोह अज्ञान है इसे ज्ञान में बदलो, अहंकार अन्धकार है इसे प्रकाश में बदल डालो। यदि···यदि तुमने ऐसा कर दिखाया तो निश्चय ही युवा तुम विश्व के नवनिर्माण का गुरुतर कार्य कर सकोगे, तुम पवित्रता एवं शान्ति की किरणें सारे जहान में फैला सकोगे, तुम दुनिया

को अनतिकता की दलदल से निकाल सकोगे, तुम अपने को विश्व सेवाधारी बना सकोगे।

सुनो युवा, तुम पर कितनी जिम्मेदारी है, लेकिन तुम हाथ पर हाथ धरे बैठे हो। समस्याओं का समाधान करने के बजाय और ही नई-नई समस्याऐं पैदा करने में अपनी शक्तियाँ गँवा रहे हो। नहीं···युवा···नहीं तुम विश्व को अपना परिवार मानकर, स्वयं को परमात्मा की सन्तान समझकर चलो, तो तुम्हारी शक्तियों का सही उपयोग हो सकेगा। तुम अपनी दैहिक और मानसिक शक्ति में आध्यात्मिकता की शक्ति को जोड़ो, तो तुम···तुम शक्तियों के पुँज बन जाओगे और फिर शक्ति के स्रोत बनकर विश्व को नई दिशा दे सकोगे।

अरे युवा, तुम तो भविष्य के निर्माता हो, वर्तमान की धरोहर हो, क्रान्ति के कलाकार हो तुम क्या नहीं कर सकते हो ? तुम्हें अपने आपको बुराइयों एवं आक्रोश के दलदल में से निकालना ही होगा, तुम्हें नैतिकता के पथ पर चलना ही होगा। क्योंकि···क्योंकि स्वयं परमपिता परमात्मा नये विश्व के निर्माण के लिये, दिव्य गुणों के विकास एवं नैतिकता की पुनःस्थापना के लिये तुम्हारा आह्वान कर रहे हैं। आओ युवा आओ और पवित्रता एवं दैवी गुणों को धारण करते हुए अपनी शक्तियों को, युवावस्था के अपने जोश को विश्व के नवनिर्माण के कार्य में खपा दो।

सुनो युवा, तुम अपने आपको भूल गये हो। तुम विस्मृति के गहन अन्धकार में भटक कर "परदर्शन एवं परचिन्तन" की राह पर चले गये हो। अब वक्त आ गया है कि तुम विस्मृति के गहन अन्धकार से निकलकर स्मति के प्रकाश में आओ। कितने भाग्यशाली हो तुम कि स्वयं परमपिता परमात्मा तुम्हें स्मृति दिला रहे हैं कि तुम महान आत्मा हो। यदि तुम अपने इस आत्मिक स्वरूप को स्मृति में रखोगे, तो स्वतः ही हमारे कदम श्रेष्ठ एवं नैतिक पथ पर चढ़ते चले जावेंगे और तुम अवगुणों की खान से निकलकर दिव्य गुणों की प्रतिमूर्ति नजर आओगे।

सुनो युवा, विश्व नव निर्माण का रास्ता तुम्हारे ही कन्धों पर होकर गुजरेगा। तुम यह भूल गये हो कि समस्याओं का समाधान तो तुम्हारे ही अन्दर समाया हुआ है। तुम क्या नहीं कर सकते हो ? विश्व एकता की बात हो या विश्व शान्ति की समस्या, विश्व बन्धुत्व का सवाल हो या फिर नैतिक पतन की समस्या हो···तुम सभी कार्यों को करने की क्षमता रखते हो। युवा तुम्हारी इन्हीं क्षमताओं का बोध कराने के लिये, तुम्हारी इन्हीं क्षमताओं का उपयोग विश्व नवनिर्माण के कार्य हेतु करने के लिये अपने अनेकानेक सेवाकेन्द्रों के माध्यम से सतत रूप से प्रयत्नशील है—"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय"। तो आओ और अपनी क्षमताओं का उपयोग विश्व को श्रेष्ठता एवं नैतिकता के पथ पर ले जाने के लिये करने का शुभ संकल्प करो। आओ और अपने को त्यागी और तपस्वी बनाकर विश्व परिवर्तन के स्वप्न को साकार कर डालो···यही आशा है सारी दुनिया को तुमसे।

और अन्त में सुनो युवा, किसी शायर ने कहा है कि—

जो हवाओं से टकराते हैं,
उन्हें तूफान कहते हैं।
और जो तूफानों से टकराते हैं,
उन्हें युवा इन्सान कहते हैं॥

युवा-क्रान्ति लायेगी विश्व में शान्ति

ब्र० कु० श्याम पचौरी, एम० ए० (पत्रकार), सिकन्दराराऊ

समय चक्र तेजी से घूम रहा है और ऐसा कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं कि अब "कलियुग जा रहा है और सतयुग आ रहा है।" क्योंकि विश्व स्तर पर अचानक घटित घटनायें एवं दुर्घटनायें इस बात की ओर इंगित कर रही हैं कि परिवर्तन की एक लहर तीव्रता से चारों तरफ फैल रही है। विश्व होवनहार विनाश के खूनी पंजे में बुरी तरह जकड़ गया है। और भारत ही नहीं वरन् सारा विश्व आज हिंसा, अशान्ति एवं तनाव की लपेट में आ गया है। चारों तरफ भय एवं अविश्वास का वातावरण फैला हुआ है। विप्लवकारी तत्व शान्ति की शक्तियों को बर्दाश्त नहीं कर सकते और उसका परिणाम होता है—भयंकर विनाश, हिंसा का ताण्डव नृत्य और उसकी खौफनाक परिस्थिति हमारे देश को भी अपनी सर्वप्रिय नेता शान्ति दूत श्रीमति इन्दिरा गांधी की क्रूर हत्या के रूप में झेलनी पड़ी। हिंसा से हिंसा बढ़ती है यही कारण हुआ कि प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद साम्प्रदायिक हिंसा फूट पड़ी और उसमें अनेकों निर्दोष भी काल के गाल में समा गये। परन्तु भारत देश महान है। इसमें ऐसे सपूत भी मौजूद हैं जो संकट की घड़ी का धैर्य एवं दृढ़ता से सामना करते हैं। अचानक ही सारे देश ने प्रचण्ड बहुमत से देश की राजनैतिक सत्ता का भार विश्व के सबसे कम उम्र के युवा प्रधानमंत्री भ्राता राजीव गांधी के कंधों पर सौंप दिया। युवा प्रधानमंत्री ने अपने जैसे युवकों का आह्वान किया और देश की प्रगति के रथ को चहुँमुखी विकास करते हुए २१वीं शताब्दी में ले जाने का अपना संकल्प व्यक्त किया है। उन्होंने शिक्षा समाज एवं राजनीति के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने का भी संकल्प लिया है। इसके लिए अंग्रेजों के जमाने से चली आ रही मैकाले की शिक्षा पद्धति को बदला जाना, समाज में युवकों एवं महिलाओं की स्थिति को उठाना एवं दहेज तथा नशाबादी के नियमों का कड़ाई से पालन करना। राजनीति में घूमिल छवि के व्यक्तियों को हटाकर दलबदल विरोधी विधेयक पास करना आदि क्रान्तिकारी कदम हैं। परन्तु इसके साथ ही आज देश में जो धर्म के नाम पर अलगाववाद पनप रहा है। तथा जातिवाद, सम्प्रदायवाद, प्रांतवाद का जो ज़हर घोला जा रहा है, इससे भारी हिंसा फूट, एवं अशान्ति फैल रही है। जिसमें भारत के युवावर्ग को भ्रमित करके धर्म एवं राजनीति के ठेकेदार अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। इसके लिए धार्मिक सौहार्द्र एवं युवाशक्ति के कल्याणकारी कार्यों में उपयोग के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय भारत सहित विश्व के ४८ देशों में स्थित अपनी १५५० शाखाओं के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा विश्व शान्ति, विश्व बन्धुत्व, विश्व एकता एवं नैतिक चारित्रिक विकास द्वारा मानवमात्र की सेवा कर रहा है। इसके मतानुसार युवकों को भौतिकवादी विनाशकारी विभीषिका से बचाकर उसमें आध्यात्मिकता की लहर प्रवाहित करने की अति आवश्यकता है। क्योंकि आज हम देखते हैं कि भारत का युवक अपनी भारतीय पुरातन संस्कृति को भूल पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने की अन्धी दौड़ दौड़ रहा है। जबकि आज पश्चिमी देशों के युवक भौतिकता से पीड़ित होकर भारत की शान्ति प्रदायनी विश्व बन्धुत्व प्रेरक आध्यात्मिक संस्कृति को अपनाने भारत की ओर दौड़ रहे हैं। आज का युवक अपने

जीविकोपार्जन हेतु ही शिक्षा प्राप्त कर रहा है। शिक्षा से उसके ज्ञान में, उसके व्यवहार में, उसकी मनोवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं आ रहा है। जिसके कारण नैतिक मूल्यों से रहित आज का युवक नशीली वस्तुओं का सेवन करके रचनात्मक प्रवृत्ति की जगह विध्वंसात्मक प्रवृत्ति अपना कर अपना एवं विश्व का भारी नुकसान कर रहा है। आज के युवकों-युवतियों के पास ऐसा कोई राष्ट्रीय उच्चकोटि के चरित्र का महापुरुष भी नहीं जिसकी जीवनचर्या से प्रेरणा ग्रहण कर वह अपना जीवन ऊँचा बना सके। अत: आज युवा वर्ग को बुराइयों से मुक्त करके उनमें राष्ट्र प्रेम एवं आध्यात्मिक जागृति लाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

हर्ष का विषय है कि संयुक्तराष्ट्र संघ ने युवकों के महत्व को समझा है और वर्ष १९८५ को युवा वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की है। चूँकि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय अशासकीय संस्था के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ का सलाहकार सदस्य है और वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ की "युवा वर्ष" कार्य समिति का भी सदस्य है अत: अपना उत्तरदायित्व समझते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने सारे देश में युवकों के सर्वांगीण विकास हेतु एक विशाल योजना तैयार की है। जिसके अन्तर्गत युवा उत्थान समारोह, परिचर्चा, युवा नैतिक उत्थान, प्रदर्शनियों, स्लाइड-शो ग्रामीण युवक-युवतियों में जागृति लाने हेतु युवा शान्ति पद यात्रायें, साइकिल यात्रायें एवं युवा राजयोग साधना शिविरों के आयोजन किये जा रहे हैं। अत: इस युवा वर्ष में सभी सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं, केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सरकारों तथा बुद्धिजीवी नागरिकों का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वे युवकों के चारित्रिक विकास हेतु सहयोग करें तो निश्चय ही भारत का भविष्य २१वीं शताब्दी में प्रवेश करने हेतु स्वर्णिम आशाओं से भरपूर एवं प्रगतिशील होगा।

संयुक्तराष्ट्र संघ ने अन्तर्राष्ट्रीय "युवा वर्ग" के तीन उद्देश्य निर्धारित किये हैं। (१) सहभागिता (Cooperation) (२) विकास (Development) (३) क्रान्ति (Revolution)

अब सवाल यह है कि "युवक" कहा किसे जाये ? इस पर विभिन्न राष्ट्रों एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। भारत में तो युवकोचित भावना एवं उत्साह से प्रेरित ६० वर्ष तक के व्यक्ति को "साठा सो पाठा" अर्थात् ६० (साठ) वर्ष का भी युवक है माना जाता है। संयुक्तराष्ट्र संघ ने १५ से २४ वर्ष की आयु के लोगों को "युवक" की संज्ञा दी है परन्तु यह यू० एन० ओ० की बहुत बड़ी त्रुटि है। ऐसा लगता है कि "युवक" के आयु वर्ग के निर्धारण में राष्ट्रसंघ तृतीय विश्व के देशों को भूल गया है। और उसने विकसित राष्ट्रों के युवकों को स्थिति को देखकर ही १५ से २४ वर्ष आयु वर्ग "युवा" के लिए निर्धारित किया है। जबकि विकासशील देश जिसमें भारत प्रमुख है में, युवावर्ग की आयु निर्धारण सीमा १५ से ३५ वर्ष है।

यदि संयुक्तराष्ट्र संघ की परिभाषा १५ से २४ वर्ष "युवा" को हो लें, तो भी संसार में युवकों को संख्या ११८ करोड़ है। विकसित एवं विकासशील देशों में युवकों की संख्या में वृद्धि की गति भी अलग-अलग है। युवकों की बहुत बड़ी आबादी अफ्रीका, लैटिन अमेरिका एवं एशिया में केन्द्रित है। युवकों की कुल जनसंख्या ११८ करोड़ में से ९३.५ करोड़ युवक तृतीय विश्व के देशों के हैं और इनकी आधी जनसंख्या अर्थात् लगभग ४७ करोड़ युवक केवल एशिया महाद्वीप में हैं।

विकासशील देशों एवं विकसित देशों के युवकों की समस्याओं में भी परिस्थिति जन्य अन्तर है। अत: सब देशों के सभी युवकों के लिए एक जैसे मापदण्ड, सुख, सुविधा साधन उपलब्ध कराने में हर देश अपनी स्वराष्ट्र नीति का निर्धारण करके ही युवा कल्याण कर सकता है।

भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ पर प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक सम्पदा एवं मानव-शक्ति के बावजूद भी अन्य विकासशील देशों की भाँति ही यहाँ का युवा वर्ग भी समस्याओं से ग्रसित है। आजादी के ३८ वर्ष बीत जाने के बाद भी यहाँ के युवा की स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है। देश की स्वतंत्रता राजनैतिक रूप से मिलने के बाद भी भारत का यह दुर्भाग्य रहा कि यहाँ आर्थिक स्वतन्त्रता नहीं मिली है और गरीब अमीर की खाई और ज्यादा गहरी होती जा रही है। एक ओर १५ प्रतिशत अति सम्पन्न वर्ग के युवा जो बड़े-बड़े महानगरों में निवास करते हैं, वे है। तो दूसरी ओर ८५ प्रतिशत युवकों का वह वर्ग है जो गाँवों में, छोटे कस्बों में, महानगरों की झुग्गी-झोंपड़ी या गरीब मध्यम वर्ग के परिवारों के हैं। जो युवा सम्पन्न परिवारों के हैं वे बहुत ही स्वच्छन्द प्रकृति के होते हैं। विकारी, विलासतायुक्त जीवन यापन करने के लिए इनके पास अपार धन सम्पति एवं कोठा बंगले कारें आदि सभी भौतिक साधन उपलब्ध हैं। पैसे के बलबूते पर यह वर्ग समाज, धर्म, राजनीति, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों पर छा जाता है। यह वर्ग शिक्षा को जीवन की खुशहाली का साधन समझ कर पैसे के बल पर ऊँची से ऊँची शिक्षा प्राप्त करके डाक्टर, वकील, प्रोफेसर, इंजीनियर आदि आसानी से बन जाता है। समाज के रीति-रिवाज, नीति परम्पराओं एवं सामाजिक नियमों की कतई परवाह न करके यह वर्ग विदेशी संस्कृति की घड़ाघड़ नकल करके स्वदेश में रहते विदेशी जैसा जीवन यापन करते हैं। यह वर्ग पाश्चात्य देशों की उन सभी चीजों की आँख मूँद कर नकल कर रहा है जो भारतीय परिपेक्ष्य में त्याज्य हैं। धर्म के क्षेत्र में भी यही उच्च वर्ग पैसे के बल पर अपने लिए मान, यश, सुविधा, स्थान प्राप्त करने का एक तरीका धर्म को बना लेता है और धर्म के ईश्वरीय लक्षणों नम्रता, मधुरता, त्याग, तपस्या एवं सहयोग की भावना से दूर होकर यह व्यक्ति धर्म में "सेवा" नाम का अच्छा शब्द प्रयोग करके मान, मर्तबा एवं महिमा के लोभ के वशीभूत हुआ, दूसरों का भी शोषण करना चाहता है ऐसा वर्ग धन से धर्म एवं धर्म से धन बटोरने में प्रवीण होता है। और दूसरे जो सेवा करते भी हों, उनसे कराके नाम अपना कर लेना तथा पवित्र धार्मिक स्थानों पर भी यह वर्ग "मेरा-तेरा" का झगड़ा खड़ा कर देता है।

दुर्भाग्य से धन के बल पर यह वर्ग राजनीति में भी अपना स्थान बना लेता है। यद्यपि देश को गम्भीर समस्याओं से ये अपरिचित ही नहीं होते, बल्कि राष्ट्र के भीतर उठने वाले ज्वार भाटे से इनका कोई गहरा सम्बन्ध नहीं होता और ना ही इनका कोई मौलिक चिन्तन ही होता है। परन्तु धन का वभव इन्हें राजनीति में उच्च स्थान प्राप्त करा देता है। और इसी कारण यह वर्ग भारत का असली युवा वर्ग कहलाता है तथा दुर्भाग्यवश ऐसा ही वर्ग देश के युवकों का प्रतिनिधित्व भी कर रहा है।

लेकिन बहु संख्यक ८५ प्रतिशत युवकों का वर्ग जो ग्रामों, कस्बों एवं मध्यमवर्गीय परिवारों में नगरों में निवास करता है, वह जीवन के हर मोर्चे पर संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ता है। आर्थिक गरीबी एवं शिक्षा की सुविधाओं के अभाव में प्रतिभा एवं योग्यता के बावजूद भी ऐसे अधिकांश युवक अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़कर अपने पारिवारिक व्यवसाय में लग जाते हैं चाहे वह खेती हो या मजदूरी हो या दुकानदारी। जो युवक किसी प्रकार सुविधा प्राप्त करके शिक्षा प्राप्त कर भी लें तो वह शिक्षा उनके "जीविकोपार्जन" का साधन ही बनकर रह जाती है उसके अलावा उनके लिए अन्य क्रिया कलापों, सामाजिक, धार्मिक या राजनैतिक बातों में भाग लेने का अवसर एवं समय ही नहीं मिल पाता है। परन्तु देखने में आया है कि यदि वे किसी प्रकार अपनी निष्ठा, लगन एवं मेहनत से समाज, धर्म या राजनीति के क्षेत्र में पदार्पण करते भी हैं तो इन्हीं के द्वारा उच्चकोटि के सामाजिक परिवर्तन, धार्मिक सुधार एवं राज-

नैतिक क्रान्तियाँ लाई जाती रही हैं।

भारत देश की आजादी में भी ८५ प्रतिशत वर्ग के युवकों ने ही जौहर दिखाया था। भले ही आजादी के बाद सत्ता का सुख-उपभोग पुनः १५ प्रतिशत वालों ने अपने लिए हथिया लिया है। धार्मिक क्रान्तियों में स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द, रामतीर्थ, कबीर, रैदास, चैतन्य महाप्रभु एवं वर्तमान में प्रजापिता ब्रह्मा एवं हजारों ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियाँ ८५ प्रतिशत वर्ग की ही देन है। समाज सुधारकों में भी राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द विद्यासागर, महात्मा गांधी, तिलक, गोखले, विनोबा भावे आदि भी ८५ प्रतिशत वर्ग वाले ही तत्कालीन युवक थे। सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, सुभाषचन्द्र बोस, रामप्रसाद बिस्मिल एवं मौलाना अब्दुल कलाम आजाद आदि आजादी के दीवाने निश्चय ही गरीब तबके के ८५ प्रतिशत युवकों में से ही थे।

दोनों ही वर्ग के युवकों के रहन-सहन आचार-विचार व्यवहार एवं चिन्तन में स्पष्ट अन्तर दिखाई पड़ता है। अन्तर्राष्ट्रीय "युवा वर्ष" एक ऐसा सुन्दर अवसर है जबकि सरकारी एवं गैर सरकारी, धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं द्वारा दोनों ही वर्गों के युवकों के लिए उनकी समस्याओं के समाधान के लिए रास्ता निकालने का प्रयास करना है। प्रथम वर्ग जो अपने धन की बाहुल्यता से शोषण कर रहा है एवं समाज में अनैतिकता के बीज बो रहा है उसके नैतिक चरित्र के विकास का रचनात्मक ठोस एवं प्रभावशाली कार्यक्रम तैयार करना है। क्योंकि इन १५ प्रतिशत युवक युवतियों के जीवन जीने का ढंग ही अलग है। महानगरों में नशीली वस्तुओं का सेवन, अश्लील साहित्य एवं अश्लील फिल्मों, सिनेमा के बढ़ते हुए आकर्षण से यह वर्ग मानसिक रोगों से पीड़ित होकर अपराध वृत्ति भी अपना रहा है।

दूसरी ओर ८५ प्रतिशत युवकों के लिए बेराजगारी अनेकों सामाजिक, आर्थिक एवं राज-नैतिक बुराइयों की जड़ हैं। बेकारी, बीमारी, अशिक्षा एवं रोगों से ग्रसित यह वर्ग भी भयंकर अपराधों में जकड़ा जा रहा है। भारत में भीषण डकैती के गिरोहों में अधिकांश युवक ही हैं। **शोषण से विद्रोही बन तोड़-फोड़ करने वाले ये युवक ही हैं।**

आज युवा शक्ति एक विस्मय की स्थिति में चौराहे पर खड़ी है। एक तरफ तो अभाव, शोषण, बेकारी, बेरोजगारी एवं भूख से विचलित बहु-संख्यक युवा वर्ग है तो दूसरी तरफ मुट्ठी भर लोग अपने बुद्धि चातुर्य एवं शोषण के द्वारा बहु संख्यक को चिढ़ा रहे हैं। काश ! **एक तरफ अम्बार अनाज के, एक तरफ मटका खाली, शानदार दावतें कहीं तो, कहीं है सूनी थाली ॥** बस यहीं से विरोध एवं विलासिता के बीच संघर्ष शुरू होता है। इस संघर्ष को, इस युवा ऊर्जा को, उसके खौलते हुए खून को, उसके व्यवस्था के प्रति पनपते विद्रोह को चालाक लोग कभी धार्मिक झगड़ों में इस्तेमाल करते हैं तो कभी भाषावाद, प्रान्तवाद, सम्प्रदायवाद के ज़हरीले वादों में क्योंकि अभाव ग्रस्त भूखा युवा भेड़िया की तरह जिधर चाहे उधर झपट रहा है। कहावत भी है "बुभुक्षिताम् किन्न करोति पापम् क्षीणांजना निष्करुणा भवन्ति।" अर्थात् भूखा क्या पाप नहीं कर सकता, क्षीण एवं सताया हुआ मानव निर्दयी हो जाता है।

तो अब तो ज्वालामुखी खौल रहा है उसे ठंडा करने की शक्ति अब किसमें है ? जो भी विनाश-कारी सामग्री तैयार है उनके आविष्कार का मस्तिष्क भी युवा वर्ग का ही है। सेना में जो लड़ रहे हैं वे भी युवा ही हैं। चारों तरफ हाहाकार मचा है।

लेकिन घबराने की आवश्यकता नहीं है, आशा की एक किरण अब भी चमक रही है। विनाश में ही सृजन समाया हुआ है। जहाँ विनाशकारी मस्तिष्क विनाश के कार्य में संलग्न है वहाँ हजारों लाखों ऐसे भी युवा वर्ग की एक वाहिनी तैयार हो

(शेष पृष्ठ १९ पर)

सहजयोगी

ब्र० कु० चक्रधारी, देहली

प्यारे बच्चो, हमें जो ईश्वरीय शिक्षा मिलती है उसमें कहा गया है कि हमें स्वयं को कोई कष्ट देने की क्रियाएँ नहीं करनी बल्कि सहजयोगी की न्यायी हमें सहज मार्ग पर चलना है। संसार में कई पन्थ, कई सम्प्रदाय और कई मत ऐसे भी हैं कि जिनके अनुयायी स्वयं को बहुत शारीरिक यातनाएँ देते और अकारण ही कष्ट झेलते हैं। वे स्वयं को पंचाग्नियों में तपाते हैं, एक टांग पर खड़े होकर भी साधना करते हैं, स्वयं को एक भूमिगत खड्डे में बन्द कर श्वास रोक लेते हैं, कई दिन तक निराहार और निर्जल जीवन व्यतीत करते हैं और इसी प्रकार काँटों की शैय्या आदि पर लेट कर या दूसरी-दूसरी यातनाएँ स्वयं को देते हैं। परमपिता परमात्मा ने कहा है कि ऐसे स्वयं को कष्ट देने से मैं नहीं मिलता हूँ। भगवान ने कहा है कि आप सब मेरे बच्चे हो और पिता कभी अपने पुत्रों को कष्ट में देखकर प्रसन्न नहीं होता; अतः आप भी न स्वयं को दुःख दो न दूसरों को !

इसी प्रसंग में महात्मा बुद्ध जी की जीवन-कहानी का एक अंश सुना देना ठीक होगा।

कहते हैं कि महात्मा बुद्ध जब राजमहल को छोड़कर जंगल में चले गये तो वहाँ उन्हें पाँच ब्राह्मण मिले। वे ब्राह्मण उन्हें साधना के विषय में बताते रहते थे। वे ब्राह्मण भी कई-कई दिन उपवास करते थे, भूखे रहते थे तथा कठोर जीवन व्यतीत करते थे और वे ऐसा ही परामर्श बुद्ध को भी देते थे। अतः उनके प्रभाव में आकर बुद्ध ने भी कष्टप्रद साधनाएं की। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इसके परिणाम स्वरूप वे शारीरिक रूप से बहुत ही दुर्बल हो गये। उनका शरीर सूख कर काँटे जैसा हो गया। ये सब उन्होंने किया तो इसलिये कि उन्हें प्रभु प्राप्ति होगी। परन्तु वास्तव में उन्हें प्राप्ति तो कुछ भी नहीं हुई बल्कि वे स्वयं को शक्तिहीन जैसा मालूम करने लगे।

उनकी जीवन कहानी में कहा गया है कि एक दिन जब वे मन को एकाग्र करने का अभ्यास कर रहे थे तब उन्हें इन्द्र का साक्षात्कार हुआ। इन्द्र हाथ में सितार लिये हुये थे। उस सितार के कुछ तार तो बहुत कसे हुए थे। उन्हें जब बजाया जाता तो वे बहुत ककर्श ध्वनि देते थे। अन्य कुछ तार ढीले थे; उन्हें जब बजाया जाता तब वे ठीक आवाज़ ही न देते। परन्तु कुछ तार ऐसे थे कि वे न तो अधिक कसे हुए थे, न कम बल्कि वे ठीक अर्थात बीच की स्थिति में थे। उनकी झंकार से मधुर स्वर निकलता था। इस प्रकार के दृश्य पर बुद्धने विचार किया।

इसके फलस्वरूप वे इस निश्चय पर पहुँचे कि न तो अधिक खाना ठीक है, न भूखों मरना। उन्होंने इस सितार की तारों की दशा से यह शिक्षा ली कि बीच की स्थिति ही ठीक है; स्वयं को कष्ट देना ठीक नहीं है। तब से लेकर उन्होंने सहज मार्ग अपनाया। उन्होंने उन ब्राह्मणों की बात को छोड़ दिया। बाद में उन्होंने अपने उपदेशों में इस बात पर बल दिया कि मनुष्य को चाहिये कि वह स्वयं को कष्ट न दे बल्कि सहज मार्ग अपनाये।

हमें भी परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान मिला है, उसमें यही कहा गया है कि हम सहज योगी बनें। "न दुःख दो, न दुःख लो"—यह हमारी नीति है। हमें विषम परिस्थितियों का सामना करने के लिये तो कहा ही गया है और यदि परिस्थिति-वश अधिक गर्मी या अधिक सर्दी में कहीं कोई आवश्यक सेवा कार्य करना होता है तो उसके लिये भी शक्तिशाली रीति से उसे झेलने के लिये कहा गया है परन्तु साथ-साथ यह भी समझाया गया है कि हमारा यह शरीर अब हमने परमपिता को समर्पित किया हुआ है और हमें इसे ट्रस्टी बनकर चलाना है और कष्ट नहीं देना है। □

संगठन में एकता

ब्र० कु० सूरज कुमार, आबू

किसी भी संस्थान की सफलता उसके कार्यकर्त्ताओं की एकता पर आधारित है। यदि संगठन में एकता है तो जिम्मेदार व्यक्तियों को सहज ही हर बात में सफलता होती है। और यदि अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग है तो छोटे-छोटे काम भी सिर दर्द लगते हैं। यह कहना सत्य होगा कि यदि संगठन एकता के सूत्र में नहीं बंधा तो संस्थान का दिनोंदिन पतन होगा, चाहे वह कितना भी धन व्यय कर ले या संख्या बढ़ा ले। हमारे इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के विभिन्न संगठनों की एकता, हमारे लिए गौरव का विषय तो है ही, साथ ही साथ सभी के लिए अनुकरणनीय भी है। तो प्रस्तुत चर्चा में संवाद शैली में इस विषय के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

राम कुमार व श्यामप्रसाद जी दोनों ही ईश्वरीय विश्वविद्यालय में राजयोग सीखने आते हैं। श्याम प्रसाद जो एक फैक्टरी के मैनेजर हैं। दोनों की पारस्परिक वार्ता का यहाँ उल्लेख है।

राम—ओम शान्ति श्याम प्रसाद जी···

श्याम—ओम शान्ति, सम्पूर्ण शान्ति हो।···

राम—कैसे चल रही है आपकी जीवन यात्रा ?

श्याम—जब से राजयोग सीखा, जीवन में काफी परिवर्तन आ गया, बुराइयाँ भी जाती रहीं, मन में काफी शान्ति रहती है, परन्तु मैनेजर का कार्यभार कभी-कभी मन में तनाव ला ही देता है।

राम—परन्तु क्या राजयोग के अभ्यास से आपको तनाव समाप्त करने में मदद नहीं मिलती ?

श्याम—हाँ, मदद तो अवश्य मिलती है, परन्तु एक बार तो मन में तनाव आ ही जाता है, क्योंकि आप जानते हैं आजकल कोई भी जिम्मेदारी से काम नहीं करता—यही कारण बन जाता है, मानसिक तनाव का।

राम—यह संसार कलियुग है, और उसका भी अन्त चारों ओर तमोप्रधानता व्याप्त है, ऐसे में हम दूसरों से भला क्या कामना रख सकते हैं। फिर भी कुछ ऐसे पहलू हैं जिन पर यदि ध्यान दिया जाए तो संगठन में कम से कम सम्भावित एकता तो आ ही सकती है। क्योंकि मानसिक एकता तो बहुत बड़ी बात है—परन्तु कम से कम सिरदर्दी तो कम हो ही सकती है।

श्याम—हाँ आजकल इसी बात की परमावश्यकता है। यदि वर्कर्स में अपनापन आ जाए और आपस में स्नेह बढ़ जाए तो वे अधिकारियों के भी अधिक सहयोगी बने और फिर सब कुछ ठीक हो जाए।

राम—एकता केवल वर्कर्स पर ही निर्भर नहीं करती, वरन् उसकी अधिक जिम्मेदारी अधिकारीगण की है तो आओ ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर कुछ चर्चा कर लें।

श्याम—हाँ अवश्य···कई दिनों से मैं आपसे कुछ विचार विमर्श करने की सोच ही रहा था।

राम—देखो, श्यामप्रसाद जी किसी भी संगठन पर उसके हैड का सीधा असर होता है। यह तो आप देख ही चुके होंगे।

श्याम—हाँ···होता तो कुछ ऐसा ही है।

राम—जैसे मैनेजर का प्रभाव दूसरे अधिकारी पर और उसका प्रभाव कार्य कर्त्ताओं पर। जैसे यदि आपमें तनिक भी लापरवाही होगी तो उसका प्रत्यक्ष प्रभाव आप प्रत्येक कार्यकर्त्ता पर देख सकते हैं।

श्याम—हाँ यह बात तो अनुभव में अच्छी तरह आई है।

राम—ठीक ऐसे ही मुख्य व्यक्ति की मानसिक स्थिति का प्रभाव, उसके व्यवहार का प्रभाव, उसके शब्दों का प्रभाव, उसकी वृत्ति का प्रभाव दूसरों पर पड़ता है।

श्याम—हाँ मानसिक स्थिति में तनाव हो जाने से व्यवहार और शब्द सब कुछ रूखा हो जाता है।

राम—मानसिक तनाव का यही कारण है कि जैसा आप चाहते हैं, वैसा ही वे नहीं करते।

श्याम—हाँ मुख्य बात तो यही है।

राम—अब बात यहीं पर आती है कि हमें यह सोचना है कि वे वैसा ही कैसे करें, जैसा आप चाहते हैं।

श्याम—हाँ बस यही एक बात हल हो जाए तो हमारे सारे कार्य भी सिद्ध हो जाएँ और मनोस्थिति भी ठीक हो जाए।

राम—श्यामप्रसाद जी···ईश्वरीय ज्ञान मिलने के बाद अब आपको यह तो ज्ञान हो ही गया कि हमारा परमपिता हमसे क्या चाहता है।

श्याम—हाँ हाँ···सब स्पष्ट है। हमारा परमपिता हमसे चाहता है कि हमारा मन पूर्णतया शुद्ध हो, उसमें श्रेष्ठ विचार हों। हम श्रेष्ठ कर्म करें, सदा योग युक्त रहें, आदि-आदि···

राम—अब हम अपने से पूछें कि जैसा भगवान हमसे चाहते हैं, वैसा ही हम करते हैं ?

श्याम—(हँसते हुए) बिल्कुल नहीं करते। मुश्किल से १०-२० प्रतिशत, जबकि हमें पूर्ण विश्वास है कि उसी में हमारा परम कल्याण है।

राम—तो मित्र···जब हम ही प्रभ की आज्ञाओं का पालन नहीं करते तो भला दूसरे हमारी आज्ञाओं का पालन क्यों करेंगे।

श्याम—(गम्भीर मुद्रा में मग्न हो जाते हैं)

राम—जितना हम परमपिता की कल्याणकारी आज्ञाओं का पालन करते हैं, उतना ही आत्मा में बल भरता है और फलस्वरूप पहले हमारी कर्मेन्द्रियाँ हमारा कहना मानती हैं और पीछे सभी हमारी आज्ञाओं को शिरोधार्य करते हैं।

श्याम—हाँ, मैं महसूस कर रहा हूँ कि जो व्यक्ति स्वयं ही अपनी कर्मेन्द्रियों का गुलाम हो, वह दूसरों के दिलों का राजा कैसे बन सकता है।

राम—और एक सूक्ष्म बात यह भी है कि हमारे अहँभाव के कारण ही लोग हमारा विरोध भी करते हैं।

श्याम—एक दूसरे का विरोध करना तो आज मनुष्य का स्वभाव बन गया है। इससे बचना इतना सहज नहीं है।

राम—ठीक कहते हैं आप, परन्तु नम्रचित्त व्यक्ति जल्दी ही विरोध को समाप्त करा सकता है।

श्याम—हाँ सूक्ष्म रूप से देखने पर कमजोरी अपनी ही लगती है।

राम—और दूसरी बात, हमें अपने श्रेष्ठ व्यवहार, शुभ चिन्तन व श्रेष्ठ स्थिति द्वारा दूसरों के स्नेह व सत्कार को भी जीतना होगा। केवल सत्कार मांगते रहने से ही काम नहीं चलेगा।

श्याम—ये कैसे होगा ? आजकल 'स्नेह' का तो संसार में दिवाला निकल चुका है। और सत्कार··· वो तो बच्चे भी माँ बाप का नहीं करते।

राम—श्याम बाबू, यह दोष केवल बच्चों का ही नहीं, माँ-बाप का भी है जिन्होंने अपने को सत्कार के योग्य नहीं बनाया।

श्याम—तो दूसरों के स्नेह व सत्कार को जीतने का भी कोई रास्ता है ?

राम—पहले तो दूसरों के प्रति अपनी मनोवृत्ति को बदलना होगा—ये वर्कर्स हैं व मैं मैनेजर हूँ—यह भाव अहंकार पैदा करता है और फलस्वरूप दोनों ओर से व्यवहार बदल जाता है, इससे संगठन टूट जाता है। आजतक यह देखा गया है कि अहँकार ही संगठन को छिन्न-भिन्न करता है।

श्याम—परन्तु यह विचार तो स्वाभाविक ही रहता है क्योंकि मैं उस पद पर हूं। यदि मैं स्वयं को मैनेजर न समझूं तो काम कैसे कराऊँ।

राम—नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है। आपको अपनी सीट की ऑथॉर्टी में तो रहना ही है, परन्तु ऑथॉर्टी के साथ अहंभाव न हो। अर्थात आप ये समझो कि ये सभी कार्यकर्त्ता मेरे भाई हैं, ये सब मेरा परिवार है। इससे समानता की वृत्ति पैदा होगी और आपस में स्नेह बढ़ेगा।

श्याम—हाँ, हम ईश्वरीय वाणी में सुनते भी हैं कि सबको आत्मिक दृष्टि से देखो व सभी को एक ही

परमपिता की सन्तान समझो।

राम—वास्तव में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि यदि संगठन के हैड की स्थिति श्रेष्ठ है तो कार्य को सफलता सर्वाधिक होगी, नहीं तो न्यून रह जाएगी। इसलिए यद्यपि संगठन में एकता रखने की जिम्मेदारी प्रत्येक व्यक्ति की है, परन्तु अधिक जिम्मेदारी मुख्य व्यक्ति की ही है।

श्याम—हाँ, अब मैं यह सत्य महसूस कर रहा हूँ। मैंने देखा कि मेरे मन का तनाव सबके मन में तनाव पैदा कर देता है, फलस्वरूप वे आपस में भी लड़ने लगते हैं और भय का वातावरण सफलता को कम कर देता है। और जब मेरा मन शान्त होता है तो लगता है कि सभी अपना काम शान्ति से कर रहे हैं।

राम—इसके लिए आप जीवन की कुछ धारणा बना लो। पहली तो यह कि तुरन्त उत्तेजित होने का स्वभाव न हो। प्रति पल जरा-सा धैर्यता से काम लें। और दूसरा प्रतिदिन कर्म से पहले ५-१० मिनट योग—अभ्यास कर लिया करो। इससे सारा वातावरण ही बदल जायेगा।

श्याम—हाँ, मैं ही नहीं, मैं सभी को पहले १० मिनट शान्ति में बैठाऊँगा।

राम—इसके अतिरिक्त, एकता लाने के कुछ और भी आधार हैं।

श्याम—अवश्य बताइये, मैं उनका प्रयोग करूंगा।

राम—अपने कार्य कर्त्ताओं की हर कठिनाई व आवश्यकता को महसूस करके उन्हें दूर करो। उन्हें यथार्थ सुविधा न मिलने से वे दबाव महसूस करते हैं, व फलस्वरूप उनमें असहयोग की भावना पैदा होती है। और न ही वे अपनेपन से काम करते। इसलिए उन्हें सन्तुष्ट करना आवश्यक है।

श्याम—हाँ यह बात भी ठीक है, हम उन्हें दबाकर उनसे काम न लें, बल्कि काम करने की उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता दें। दमन भी बहुत खराब है, इससे मनुष्य का शारीरिक व मानसिक विकास रुक जाता है।

राम—इसके अतिरिक्त जब कभी उनसे गलती हो जाए या वे कुछ नुकसान कर बैठें, तो उस समय उनसे हमारा व्यवहार रूखा न हो। हम उन्हें उत्साह दिलायें, उनकी गलती को भुला दें, उसे बार-बार उजागर न करें, तो देखा गया है कि वे उस नुकसान की पूर्ति स्वतः ही कर लेते हैं।

श्याम—हाँ, बस यही गलती हम सब करते हैं, हम फौरन उबल पड़ते हैं। उल्टा-सुल्टा बोलने लगते हैं। यद्यपि पीछे स्वयं को भी पछतावा होता अवश्य है।

राम—देखो, ब्रह्मा बाबा १४ वर्षों तक ३५० भाई-बहनों के संगठन को एकता के सूत्र में बाँधे रहे। इन्हीं गुणों के कारण। वे अपने शब्दों से सभी को उत्साहित करते थे, किसी को भी निराश नहीं।

और हाँ, एक बात और है। आप रोज अपने कार्यकर्त्ताओं के पास जाएँ, उनका हाल चाल पूछें, उनकी आवश्यकताएँ पूछें, इससे वे सहज ही आपके इशारे पर काम करने लगेंगे।

और वास्तव में कार्यकर्त्ताओं को चाहिए कि वे सदा ही एक दूसरे की रिपोर्ट ही न करते रहें। इससे आपस में तनाव बढ़ता है, स्नेह समाप्त हो जाता है।

श्याम—नहीं तो वे क्या करें? दूसरे गलती करते हैं, सुधार नहीं करते तो रिपोर्ट तो करनी ही पड़ेगी।

राम—अच्छा तो यही है कि आपस में ही सुधार कर लें। ऐसा न हो तो ईर्ष्या भाव से रिपोर्ट न करे, सुधार भाव से ही कहें। और रिपोर्ट आने पर अधिकारी का कर्त्तव्य है कि इस तरह समाधान करे, ताकि पारस्परिक तनाव न बढ़े।

श्याम—हाँ—ये कला तो राजयोग से अब सीख ही लेंगे।

राम—और भी, संगठन को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए अपना मैं पन छोड़ना होगा। एक-एक मनुष्य के महत्व को समझकर उसे महत्व देना होगा, सभी को सम्मान व शुभ-भावना की दृष्टि से देखना होगा तब एकता आयेगी व तनाव कम होगा।

श्याम—हाँ यह तो सत्य है कि दूसरों को सहयोगी बनाने के लिए उनके विचारों को भी सम्मान देना होगा।

राम—हाँ तब ही प्रशासन भी श्रेष्ठ, तनाव मुक्त स्वत: ही होगा और पूरा संगठन एक परिवार की तरह रहेगा। सभी अपना-अपना काम पूर्ण जिम्मेदारी से करेंगे और इस प्रकार संगठन की शक्ति बढ़ने से चहुँमुखी उन्नति होगी। यदि लोग आपस में ही लड़ते रहेंगे तो सब कुछ समाप्त हो जाएगा।

श्याम—बहुत रोशनी मिली आज मुझे। तभी तो आपके यहाँ बड़ी शान्ति है इस एकता व स्नेह के कारण ही यह संस्था उन्नति के शिखर पर जा रही है।

राम—हाँ, वास्तव में एकता शब्द का निर्माण एक तार से हुआ है अर्थात जहाँ सबकी बुद्धि की तार एक परमपिता से जुड़ी होगी, वहीं एकता होगी यही राजयोग है। राजयोग से मनुष्य की निर्णय शक्ति व मनोबल बढ़ता है उसका विवेक निखरता है और वह एकता की कला सीख लेता है।

श्याम—तो यही कहा जाये कि जितनी अधिक राजयोग में एकाग्रता बढ़ेगी, उतनी ही संगठन में एकता बढ़ेगी। तो मैं भी आज से राजयोग का अभ्यास बढ़ाऊँगा।

राम—हाँ, दिन में कम से कम ५ बार ५-५ मिनट योग अभ्यास करने से काफी सुन्दर अनुभव होगा। इससे मन की उलझन भी समाप्त होगी और थकान भी नहीं होगी।

श्याम—और हाँ, यह बात मैंने समझ ली कि मुझे सभी का स्नेह व आदर जीतना होगा, माँगना नहीं। आज मनुष्य स्नेह व आदर का भिखारी बन गया है, वह पात्र नहीं रहा और यही अनेक समस्याओं का बीज है।

राम—अच्छा, चलें योग-अभ्यास का समय हो गया। अब योग-युक्त होकर परम आनन्द व ईश्वरीय सुखों का अनुभव करें।

श्याम—बहुत-बहुत धन्यवाद···ऐसी चर्चाएँ होती रहें तो बहुत लाभ हो।

दोनों का प्रस्थान।

गीत

ब्र० कु० मोहन, अमृतसर

माया के तूफानों को तुम्हें पार करते जाना है
रुकना नहीं है मार्ग में, विघ्नों से नां घबराना है
याद करो तुम हो एक योद्धा, योद्धा मैदान में डटता है
सर भी तन से कट जाये वो पीछे ना हटता है
तुम्हें दिया जो लक्ष बाबा ने, उस मन्जिल को पाना है
माया के तूफानों को·····

निश्चय तुम्हारा ऐसा हो, संशय का संकल्प ना आये
मन में कभी कुछ आये तो, वाचा उसे नां अपनाये
गिरने गिराने की बातें छोड़ो, तुम्हें गिरतों को उठाना है
माया के तूफानों को·····
तन से, मन से और धन से, अनेक तरह के वार भी होंगे
समझोगे तुम जिसको समझू, संशय की वो बात कहेंगे
शोश माया को झुकाना ना, आगे को बढ़ते जाना है
माया के तूफानों को·····

कहानी

वाचालो लभते नाशम्

परमात्मा ज्ञान के सागर हैं वे ज्ञान रत्नों का भण्डार हैं। वे परम शिक्षक के रूप में कहते हैं— "मीठे बच्चे कम बोलो, धीरे बोलो, शान्त में रहो।" बात साधारण लगती है परन्तु जब हम महीन बुद्धि से ज्ञान की गहराई में जाते हैं तो वह महान दिखाई देती है। एक छोटी सी बात हमें महान बना देती है और वही यदि उसकी ओर ध्यान न दें तो छोटा बना देती है।

इसी पर हम एक छोटी सी लोक कथा प्रस्तुत करते हैं—

बहुत पुराने समय की बात है। एक सुनहरे जलाशय में एक कछुवा रहता था। उसी जलाशय पर एक हंसों का जोड़ा भी आया करता था। धीरे-धीरे उनमें स्नेह बढ़ने लगा और मित्रता हो गई। रोज हंस का जोड़ा आता, कछुवा भी किनारे पर आ जाता।

परस्पर प्रेम की दो बातें होतीं, सुख दुःख की बातें होतीं और कुछ समय बाद अपने-अपने स्थान पर पहुँच जाते।

समय पंख लगाकर उड़ता गया। उनकी मित्रता भी बनी रही। अचानक विपत्ति आई। हुआ यह कि भयंकर अकाल पड़ा। समस्त जलाशय सूखने लगे। यह देखकर हंसों को चिन्ता हुई। उन्होंने सोचा कि हमारा तो कुछ नहीं पर कछुए का क्या होगा ? हम तो दूसरे जलाशय में उड़कर जा सकते हैं। सच्चा मित्र वही होता है जो विपत्ति आने पर साथ दे। उन्होंने एक युक्ति सोची। वे कहीं से एक छोटी मजबूत लकड़ी लाये। कछुए से कहा "मित्र ! अब यह जलाशय सूखने वाला है। पानी के अभाव में यहाँ तुम बच न सकोगे। इसलिए तुम्हें हम एक बहुत गहरे जलाशय में पहुँचा देते हैं। वहाँ सदैव सुखी व मौज में रहोगे। वहाँ का पानी कभी नहीं सूखता। इस एक छोटी लकड़ी से तुम्हें ले चलेंगे।"

कछुवा बोला "मित्रो ! मैं तुम्हारा अहसान कभी नहीं भूलूंगा। आप मुझे नया जीवन दे रहे हो। पर यह तो बताओ कि आप मुझे वहां तक कैसे पहुँचा सकोगे ?

हंसों ने कछुवे को समझाते हुये कहा "हम दोनों इस लकड़ी को दोनों सिरों से चोंच से पकड़ लेंगे। तुम बीच में अपने मुँह से जोर से पकड़ लेना। हम तुम्हें लेकर उड़ चलेंगे।

कछुवा बड़ा खुश हुआ, बोला "बहुत अच्छा।" "पर हमारी एक शर्त है" हंस बोले। "वह क्या ?" कछुवे ने पूछा। उन्होंने कहा कि जब हम तुम्हें लेकर चलेंगे तो गाँव, शहर, पहाड़ सब आयेंगे। गाँव में बच्चे, ग्वाल-बाल आदि तुम्हें देखकर चिल्लायेंगे। अनाप शनाप बोलेंगे, पर तुम्हें सावधान रहना है। शान्त रहना, कुछ नहीं बोलना। वरना तुम बेमौत मारे जाओगे। कछुवे ने शर्त स्वीकार कर ली। हंस कछुए को लकड़ी की सहायता से ले उड़े।

पर्वत, पठार, घाटियों, नदियों से ऊपर होकर वे गुजर रहे थे। अचानक वे एक गाँव के ऊपर होकर गुजरे। वहाँ पर काफी भीड़ हो गई और वे सब इस कोतूहल को देखने लगे। बालक चिल्लाने लगे "अरे ! यह कछुवा गिरा ! बस मरा कि मरा ! अब मरेगा ! इस प्रकार से वे चिल्लाने लगे। कछुए को बड़ा क्रोध आया पर मुँह से नहीं बोला। आगे फिर जंगल में ग्वाल बाल जोर से चिल्लाये 'कछुआ मरेगा ? अब मरा !' इस बार कछुए से रहा न गया वह अपनी प्रतिज्ञा भूल गया। वह ज़ोर से क्रोध में बोल पड़ा "तुम जैसे म···रो··· गे।" स···र···र। धड़ाम ! कछुए ने मुँह खोला

लकड़ी मुँह से छूट गई। वह ज़मीन पर एक पत्थर पर गिरा। चट्टान से टकराकर चकनाचूर हो गया। उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

बेचारे हँसों का दिल करुणा व रहम से भर गया। पर क्या किया जा सकता था 'जैसी करनी वैसी भरनी।' कछुए ने अपने शुभचिन्तक की आज्ञा का उल्लंघन किया तो सजा मिल गई। अतः हमें अधिक नहीं बोलना चाहिए। अधिक बोलने वाला नाश नुकसान को पाता है।

आज हमें हमारे परम मित्र परमात्मा हमें इस विषय सागर से क्षीर सागर को, इस नर्क से स्वर्ग को, इस दुःखधाम से सुखधाम को ले जा रहे हैं। क्योंकि इस विषय सागर का अन्त तो हाइड्रोजन व परमाणु बमों द्वारा होने वाला है। इस पतित दुनिया का अब विनाश होना है। वे करुणा के सागर हमें नई दुनिया में ले जा रहे हैं। परन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो हमें ज्ञान मार्ग पर चलने पर भड़काते हैं। अनाप शनाप कहते हैं। पर हमें मजबूत रहना है अपने परम मित्र का हाथ व साथ भूलकर भी नहीं छोड़ना है। उनकी योग की उँगली अच्छी प्रकार पकड़े रहना है। श्रीमत पर चलना है। उनका हाथ व साथ छोड़ने वाले की वही दशा होगी जो कछुए की हुई।

○

युवा क्रान्ति लाएगी विश्व में शान्ति

(पृष्ठ १२ का शेष)

रही है जो विनाश की विभीषिका में सृजन के बीज बो रही है। खूनी क्रान्ति में रक्तहीन शान्ति ला रही है। जो कार्य अनेक प्रकार के हथियार नहीं कर सकते, विज्ञान की शक्ति नहीं कर सकती है। वह कार्य यह साइलैंस (शान्ति) की शक्ति सेना कर रही है।

मनसा शक्ति सबसे तीक्ष्ण शक्ति है। उसमें भी योगबल सबसे बड़ा बल है। तो अब ऐसी योग शक्ति तैयार हुई है जो विनाशकारी शक्तियों के मनोपरिवर्तन एक स्थान पर बैठे ही कर देगी। यह सत्य है कि—प्रकृति के नियमानुसार अति का अन्त अवश्य होता है। अतः जो अति आताताई है उनका विनाश जरूर होगा परन्तु जो सृजनशील है, दिव्ययोगी है उनकी शक्ति जौहर दिखलाएगी और उनके तपोबल, योगबल, ज्ञानबल से बहुत शाघ्र ही नई दुनिया की स्थापना होगी और विश्व यह देखकर अवश्य ही आश्चर्यचकित होगा कि कैसे "स्वर्णिम विचार से स्वर्णिम संसार" की स्थापना ईश्वरीय शक्ति कर रही है।

युवा, तू क्या नहीं कर सकता ? युवा का जोश, उमंग, उत्साह उमड़ रहा है और यह बहने लगा है। भारत देश महान है। इस महानभूमि को भारतमाता कहते हैं क्योंकि ज्ञान का कलश परमात्मा शिव ने माताओं के सिरों पर रखा है। इसके उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम एवं मध्य माउन्ट-आबू से एक पंचमुखी महाधारा युवा पगयात्रा इस वर्ष जून मास से शुरू होने जा रही है। जिसमें देश के सोते युवा वर्ग को जो देहातों में शक्तिहीन पड़ा है उसे झकझोर कर जगाया जायेगा।

कन्या कुमारी से दिल्ली, सोमनाथ से दिल्ली, अमृतसर से दिल्ली, गोहाटी आसाम से दिल्ली एवं मध्य में माउन्ट आबू से दिल्ली तक युवा पदयात्रा की धारा बहेगी जो एक नई चेतना, नया विचार, नया आचार, नया संचार राष्ट्र की धमनियों में करेगी। आओ ! मेरे प्यारे युवा साथियो, बहिनो भाइयो निकल पड़ो इस महान यात्रा पर। यह समय की पुकार है, चींटी मार्ग छोड़ विहंगमार्ग से सेवा करने की ललकार है।

युवको ! आगे आओ

(अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष पर विशेष युवकों के प्रति ईश्वरीय सन्देश)

ब्र० कु० सूरज प्रकाश, सहारनपुर

भगवान करे आह्वान तुम्हारा अब न देर लगाओ।
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ॥

(१) तुम सपूत शिव बाबा के तुम पर मानवता इठलाई
सदा जगत ने तुम ही से तो नूतन शक्ति पाई
तुम जागे तो सब जग जागा तुम सोये सब सोये
अज्ञान नींद में युवक रहे तो राष्ट्र सभी कुछ खोये
रात समझ कर सो रहे जो उनको जरा जगाओ
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ

(२) तुम पाण्डव सेना के वीर सिपाही अंगद सम अचल अडोल
देखना जरा व्यर्थ न जाए संगम की घड़ियाँ अनमोल
बनफूलों सा कोमल सबके जीवन में दो ऐसा रस घोल
आपके मीठे बोल सभी के अन्तर्मन की खिड़की दें खोल
सत्य, सरलता, सादगी, संयम जीवन में अपनाओ
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ

(३) रावण की दुनिया छोड़ चुके अब राम की दुनिया में जीना
चाँदी के प्याले में रखा काम का जहर न तुम पीना
ऊपर सोने का वर्क चढ़ा नीचे देखो तो है गोबर
सोने का हिरण पकड़ने को न भागना तुम मोहित होकर
रावण की कैद में फँसने से स्वयं को सदा बचाओ
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ

(४) टूट पड़ा है सारे जग में माया का कहर
हर कोई दवा के धोखे में पी रहा जहर
युग-कुहासा मिटे, पौ फटे, कोहरा न रहने पाये
ओ मास्टर ज्ञानसूर्य खिला दो धरती पर दोपहर
शिव के कुशल-सक्षम-नेतृत्व में अपने कदम बढ़ाओ
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ

(५) संगमयुग, मौजों का युग, हमें न कोई फिकर है
केवल यही लगी रहे धुन जाना अपने घर है
उड़ने और उड़ाने को मिले ज्ञान योग के पर हैं
सर्व समर्थ अपना साथी तो फिर किस बात का डर है
बाप मिला सब कुछ मिला नित गीत खुशी के गाओ
जग को नयी रोशनी देने युवको आगे आओ

सभी समस्याओं का हल
ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा सम्भव

आज मानव, देश और समाज अनेकानेक समस्याओं में उलझा हुआ है। इन समस्याओं में अनुशासनहीनता, विश्व शान्ति, भ्रष्टाचार, जनसंख्या की अति वृद्धि, गरीबी आदि मुख्य हैं। आज यदि लोगों से पूछा जाय कि क्या अनुशासनहीनता की समस्या हल हो सकती है ? तो अधिकांश उत्तर देते हैं—"नहीं ! देश में उपद्रव, अराजकता, अनुशासनहीनता आदि तो किसी-न-किसी मात्रा में और किसी-न-किसी रूप में अनादि काल से ही चले आये हैं।" अच्छा, यह तो बताइये कि—"क्या भ्रष्टाचार की समस्या का अन्त हो सकता है ?" वे उत्तर देते हुए कहते हैं—"भ्रष्टाचार ? इसका उन्मूलन करने वाला तो कोई पैदा ही नहीं हुआ ! आज किस देश में भ्रष्टाचार नहीं है ? हमारे पुराण भी बताते हैं कि भ्रष्टाचार और गोलमाल तो शुरू से ही चले आये हैं !"

यदि ऐसे लोगों से यह प्रश्न कर दिया जाय—"क्या गृहस्थ आश्रम में मनुष्य को ईश्वरानुभूति हो सकती है ?" तो उत्तर मिलता है कि—"ईश्वरानुभूति तो ऋषि-मुनियों को भी नहीं हुई ! वे भी नेति-नेति कहते रहे। सभी शास्त्र यही कहते हैं कि ईश्वर अगम-अगोचर है।"

ऐसे निराशावाद का कारण

जो लोग उपरोक्त उत्तर देते हैं, वे अपने अध्ययन, मन्तव्य तथा स्थिति के अनुसार तो ठीक ही उत्तर देते हैं क्योंकि मनुष्य के पढ़ने के लिये जो शास्त्र-पुराण-इतिहास आदि आज उपलब्ध हैं, वे ऐसा ही कहते हैं ! इसके अतिरिक्त आज समाज और देश की स्थिति भी ऐसी विकट है कि उसको सुधारना किसी मनुष्य का काम नहीं है ! जब सभी मनुष्यों में कोई-न-कोई विकार हो या भ्रष्टाचार हो, तो समाज को श्रेष्ठाचारी और निर्विकारी कौन बना सकता है ? आज अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, निर्धनता आदि की समस्याएँ इतनी उग्र एवं जटिल हैं कि उनका उन्मूलन मनुष्य की शक्ति से बाहर है।

परन्तु यह कहना गलत है कि सृष्टि में कभी भी पूर्ण रूप से अनुशासन और श्रेष्ठाचार था ही नहीं और कि आधुनिक समस्याओं का हल हो ही नहीं सकता ! वास्तव में सतयुग और त्रेतायुग में न जनसंख्या की अतिवृद्धि की समस्या थी और न निर्धनता या बेरोज़गारी की। तब न वस्तुओं में मिलावट या भ्रष्टाचार की समस्या थी न अनुशासनहीनता की। उस समय जो श्रेष्ठाचार या सच्चा स्वराज्य था उसकी स्थापना परमपिता परमात्मा शिव ने ही प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा की थी और वह ही इस कार्य को हर ५००० वर्ष के बाद करते हैं।

आधार भी ग़लत और उदाहरण भी गलत

अतः आज मनुष्यों का जो निराशावाद है, उसका कारण उस सतयुगी सृष्टि के बारे में तथा परमपिता परमात्मा के गुणों तथा कर्त्तव्यों की अभिव्यक्ति के समय के बारे में अज्ञान है ! जो लोग कहते हैं कि इन समस्याओं का हल हो ही नहीं सकता और कि ईश्वरानुभूति हो हो नहीं सकती, उनके मन्तव्य का एक तो **आधार गलत है** और दूसरा, वे जो **उदाहरण** अपने मत की पुष्टि में देते हैं, वे भी ग़लत हैं ! उनकी मान्यता का आधार मनुष्य-कृत ग्रंथ, पुराण, इतिहास आदि हैं और वे सभी ग्रंथ द्वापर युग के विस्मृति-काल में लिखे हुए हैं। उन ग्रंथों में सतयुग और त्रेता का यथार्थ चित्रण नहीं है। उनमें यह जो लिखा है कि सतयुग में भी प्रह्लाद के समय हिरण्यकश्यप था और त्रेतायुग में भी राम के समय रावण जैसे राक्षस थे, यह वाच्यार्थ में सत्य नहीं हैं ! वास्तव में त्रेतायुग के राम की रानी सीताजी का अपहरण नहीं हुआ था, न ही द्वापर युग में श्रीकृष्ण के समय में भी कंस, जरासंध, शिशुपाल आदि थे बल्कि ये सभी आख्यान रूपक के तौर पर दिये गये हैं और

उनका आध्यात्मिक ही अर्थ है न कि लौकिक। पुनश्च, वे संगम युग से सम्बन्धित हैं न कि सतयुग या त्रेतायुग से। अत: **आधार** और **उदाहरण** ग़लत होने के कारण निराशावादियों की यह मान्यता भी ग़लत है कि ये समस्याएँ शुरू से चली आयी हैं और कि इन समस्याओं का हल असम्भव है और यह शुरू ही से चली आ रही हैं।

इन समस्याओं के कारण

जो लोग इन समस्याओं का हल सम्भव मानते हैं, वे प्राय: इनके अलग-अलग कारण और निवारण बताते हैं। परन्तु यदि गहराई से देखा जाय तो मालूम होगा कि सभी समस्याओं के तीन मुख्य कारण हैं। उनमें से एक मुख्य कारण है—**पारस्परिक सम्बन्धों में विषमता।**

उदाहरण के तौर पर आज घर में स्त्री-पति, सास-बहू, भाई-भाई, पिता-पुत्र आदि के सम्बन्ध ठीक न होने के कारण ही घर में चिन्ता और अशान्ति रहती है। एक पड़ोसी और दूसरे पड़ोसी में ठीक सम्बन्ध न होने से कलह-क्लेश पदा होता है। छोटों के बड़ों के साथ ठीक सम्बन्ध न होने से छोटे बड़ों को सम्मान नहीं देते और बड़े छोटों को स्नेह नहीं देते और इससे अनुशासनहीनता की समस्या पैदा होती है। धार्मिक और राजनीतिक सम्प्रदायों एवं दलों (Groups) में सम्बन्ध ठीक न होने के कारण बहुत ही वमनस्य, द्वन्द्व और दुर्भावना का वातावरण बनता है। देशों के सम्बन्धों में विषमता होने के फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध शुरू हो जाते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि आज मुख्य समस्या यह है कि पारस्परिक सम्बन्धों में स्नेह, सौहार्द्र, सहानुभति, सहयोग, विशाल दृष्टिकोण और एकता की भावना आदि दिव्य गुणों की कमी है।

प्रश्न उठता है कि हमारे सम्बन्धों में स्नेह और सहानुभूति क्यों नहीं? इसका कारण यह है कि पारस्परिक सम्बन्ध हम पर जो कर्त्तव्य लागू करते हैं, उन कर्त्तव्यों को हम ठीक तरह नहीं निभाते। यदि सम्बन्ध के आधार पर मनुष्य उचित ही अधिकारों और सुविधाओं की आशा रखे और, साथ-साथ, सम्बन्ध के आधार पर जिन कर्त्तव्यों (Duties) की **जिम्मेदारी** उस पर आती है, उन्हें भी उचित मान कर वह उन्हें विधिपूर्वक एवं ट्रस्टी बन कर करे तो इस एक फ़ार्मूले को अपनाने से विश्व-भर की सभी समस्याएँ हल हो सकती हैं।

फजूलखर्ची

समस्याओं का दूसरा मुख्य कारण है—**फजूलखर्ची**। आज मनुष्य सिग्रेट-बीड़ी, पान-सुपारी, व्यर्थ के फैशन और सिनेमा पर जितना खर्च करता है, संसार-भर में इन व्यसनों पर होने वाली फ़जूलखर्ची को यदि रोक दिया जाय तो इस प्रकार बचत के धन को संसार में उपजाऊ (Wealth producing) धन्धों पर खर्च करके बहुत ही सुखसमृद्धि की जा सकती है। इसी प्रकार, आज मनुष्य अपनी **मानसिक-शक्ति** को भी फ़ालतू बातों में खर्च कर देता है। घंटों व्यर्थ की गप-शप में, पारस्परिक विरोध में, पार्टीबाज़ी में, इधर-उधर की निष्प्रयोजन बातों में ही वह अपनी संकल्प शक्ति को और समय को गँवा डालता है। यदि वह इस शक्ति को बचा कर रचनात्मक कार्यों में तथा संसार की भलाई के लिए सोच-विचार करने में अथवा अपनी उन्नति में लगाये तो बहुत ही कल्याण हो सकता है। कहावत भी है कि—बेगार आदमी का मस्तिष्क शैतानी सोचता है (An empty man's brain is a devil's workshop)। अत: यदि मनुष्य को व्यर्थ के संकल्पों और विचारों से बचा कर किसी उच्च उद्देश्य की प्राप्ति में लगा दिया जाय तो संसार का बहुत भला हो सकता है।

समस्याओं का एक और कारण—अव्यवस्था

समस्याओं का तीसरा कारण—**अव्यवस्था** है। सम्बन्धों में विषमता भी प्राय: अव्यवस्था से पैदा होती है। घर की व्यवस्था ठीक न होने से घर की हालत बिगड़ जाती है। सरकार के कार्य में ठीक व्यवस्था अथवा ठीक प्रशासन (Administration) न होने से देश की बहुत हानि होती है। 'व्यवस्था' का अर्थ यह है कि—जो जिस कार्य के योग्य हो, उसे

वह कार्य दिया जाय। जो वस्तु जहाँ लगनी चाहिये, उसे वहाँ लगाया जाय। जिस समय जो कार्य अधिक आवश्यक हो, उस समय उसी की ओर ध्यान दिया जाय। जो साधन अपने पास हों, उनका प्रयोग किया जाय और उन्हें ठीक समय पर, ठीक तरह से, ठीक उद्देश्य के लिये प्रयोग किया जाए।" आज देश में जन-शक्ति, प्राकृतिक देन (Natural Resources), जैसे कि नदी का पानी, खनिज पदार्थ, भूमि आदि बहुत हैं, परन्तु उनको देश के लाभ के लिये प्रयोग में लाने की व्यवस्था (Employment of resources) ठीक नहीं है। आज एक छोटे-से बाजार में एक ही वस्तु की दस दुकानें होती हैं और हर दुकान पर तीन-चार आदमी होते हैं और, इस प्रकार, ४० मनुष्य ग्राहक की इन्तज़ार में हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहते हैं। आज देश में कृषि की उपज बढ़ाने के लिए इञ्जीनियर (Agricultural Engineers) चाहियें परन्तु प्रशिक्षण-केन्द्रों में सिविल इञ्जीनियर, मेकीनिकल इञ्जीनियर या ऐलेक्ट्रीकल इञ्जीनियरों के प्रशिक्षण की व्यवस्था अधिक है। आज केन्द्रीय सचिवालय में एक-एक फ़ाईल को चलाने में न जाने कितने मनुष्य अपना हाथ लगाते हैं जिससे कि जनता को भी असुविधा और परेशानी होती है और कई कर्मचारियों के कार्य का भी ठीक उपयोग नहीं होता। घर में भी यदि सास का काम बहू अपने हाथ में ले ले और पिता के अधिकार-क्षेत्र का काम पुत्र करने लगे तो सम्बन्धों में विषमता पैदा होती है। मनुष्य के अपने निजी जीवन में भी अव्यवस्था होने से उसे परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

अतः यदि इन तीन कारणों का निवारण किया जा सके तो व्यक्ति और समाज दोनों सुखी हो सकते हैं। परन्तु इन तीनों को ठीक करने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और सहज योग के सिवा कोई साधन नहीं है।

कोई सोच सकता है कि ज्ञान और योग का व्यवस्था या प्रशासन के साथ क्या सम्बन्ध है? इस प्रश्न पर विचार करने से मनुष्य इस परिणाम पर पहुँचेगा कि सम्बन्ध तो गहरा है। ज्ञान द्वारा ही मनुष्य व्यर्थ संकल्पों को रोक सकता है और योग द्वारा ही वह मन को काबू में कर सकता है। मनुष्य में जो व्यसन और वासनाएँ हैं, जिनके कारण वह बहुत धन व्यर्थ करता है, वह भी योग द्वारा ही उससे एक-साथ (Whole lot) छूट सकते हैं। तन द्वारा मनुष्य जो विकर्म करता है अथवा व्यर्थ बातों या कर्मों में समय तथा शक्ति गँवाता है, उससे भी मनुष्य को ज्ञान तथा योग ही बचा सकते हैं।

किसके साथ हमारे क्या सम्बन्ध हैं, वे कहाँ तक ठीक हैं तथा उन्हें कैसे निभाना चाहिये—यह तो ईश्वरीय ज्ञान का एक मुख्य विषय ही है। पुनश्च, सभी सम्बन्धों में भी विषमता का मुख्य कारण तो वास्तव में यह है कि मनुष्य आज अपने परमपिता परमात्मा से अपना नाता ठीक प्रकार से नहीं जानता और उसे ठीक प्रकार से नहीं निभाता! और, सभी धर्मानुयायियों के जो आदि पिता (प्रजापिता ब्रह्मा या ऐडम) हैं, उस सम्बन्ध से वह विमुख हैं तथा मनुष्य-मनुष्य का भी जो आत्मिक सम्बन्ध है, उससे भी वह विमुख है। इन मौलिक सम्बन्धों को न जानने तथा न निभाने के कारण ही तो आज सारे दुःख हैं। ज्ञान हमें इन्हीं सब सम्बन्धों का आवश्यक ज्ञान देता है और योग हमें इन सम्बन्धों को निभाने के योग्य बनाता है। धर्म हमें कर्त्तव्यों का ज्ञान देता है और उन कर्त्तव्यों को 'पुण्य' बताकर उन्हें करने के लिए प्रेरित करता है तथा कर्त्तव्य-विमुखता को 'पाप' बताकर हमें कर्तव्य-परायण बनाता है।

जब ज्ञान और योग द्वारा हमारा मानसिक संतुलन फिर से कायम होता है और हम राग-द्वेष से रहित होकर तथा चिन्ता-विकल्प को छोड़ कर सोचने के योग्य बनते हैं, तभी हमारी विचारधारा भी व्यवस्थित होती है, निर्णय-शक्ति प्रखर होती है, विवेक शक्ति बढ़ती है और बुद्धि कुशाग्र होती है। उसके फलस्वरूप व्यवस्था करने में भी हमें काफ़ी सहायता मिलती है।

पुनश्च, ज्ञान हमें स्नेह, सौहार्द्र, सहानुभूति,

(शेष पृष्ठ २४ पर)

सूक्ष्म पुरुषार्थ

ब्र० कु० सन्तराम, कानपुर

हमारे अन्दर जो सुषुप्त कमज़ोरियाँ होती हैं, माया उन्हें जाग्रत करके खड़ा कर देती है। इन कमज़ोरियों का रूप प्रायः अहम्, स्वार्थ, आसक्ति व अधिकार का होता है। जब मनुष्य ज्ञान की धारणा करते हैं, तब भी सूक्ष्म रूप से उनमें अहम् व अधिकार की भावनाएँ जागत हो सकती हैं तथा स्वार्थ व आसक्ति, जो अति सूक्ष्म दुर्भावनाएँ हैं, वह भी प्रादुर्भूत हो सकती हैं। इस प्रकार, पुरुषार्थी विचार सागर मन्थन के बिना इन कमज़ोरियों का न तो अनुभव ही कर सकता है और न ही उन पर विजय पाने के लिए कोई पुरुषार्थ ही कर सकता है। उसका सारा ध्यान अन्य आत्माओं की सेवा पर तो रहता है जो वास्तव में दूसरा पुरुषार्थ हैं किन्तु उसका ध्यान अपने को सुधारने पर नहीं रहता जो ही वास्तव में पहला सक्ष्म पुरुषार्थ है। ऐसी स्थिति में, उसके ज्ञान का भी दूसरों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और धीरे-धीरे उसका आत्म-बल तथा प्रभाव दोनों ही गिरते जाते हैं। इस प्रकार पुरुषार्थी के मार्ग में एक बड़ा विघ्न (Hurdle) आ जाता है जिसे पार करने के लिए अन्तर्मुखी होकर अपना सारा ध्यान अपनी छिपी हुई कमज़ोरियों की अनुभूति पर देना चाहिए। यही सूक्ष्म पुरुषार्थ है। इस प्रकार, जब पुरुषार्थी अपनी गुप्त कमज़ोरियों को पहचान कर बुद्धियोग बल से उन पर निरन्तर ध्यान देता है तथा अपना चार्ट रखता है तभी उन पर विजय प्राप्त कर पाता है। जब वह अपने दृष्टि-कोण को बदल कर तथा स्वार्थ, अहम् भाव, आसक्ति व अधिकार के स्थान पर अपने में त्याग, सेवा, स्नेह व अनासक्ति धारण करता है तब ही उसे आन्तरिक खुशी होती है और उसकी बुद्धि हल्की रहती है। वास्तव में तभी वह ईश्वरीय सेवाधारी बनता है तथा अन्य आत्माओं को जागृत करके उन्हें निर्विकारिता यथा दैवी गुणों की धारण के लिए प्रेरणा दे सकता है।

अतः स्पष्ट है कि रूहानी सेवाधारी को सदैव अपने ऊपर ध्यान रखना आवश्यक है। इसके बिना उसकी मनोवृत्तियों तथा धारणाओं में कोई सुधार न होगा और उसके आत्मबल में वृद्धि न होगी। अन्य आत्माओं को जागृत करने की सेवा भी अत्यावश्यक है किन्तु उसके लिए सूक्ष्म पुरुषर्थी को अपने को भी पलटाना आवश्यक है।

अतः केवल दूसरों की सेवा में ही रहना तथा अपने ऊपर ध्यान न देना भी महान् भूल ही है जिससे अहंकार व अधिकार की भावनाओं में वृद्धि होने से पुरुषार्थी और ही गहरे गढ्ढे में गिरता जाता है!

□

सभी समस्याओं का हल······
(पृष्ठ २३ का शेष)

प्रेम आदि के सद्‌गुणों को अथवा ईश्वरीय गुणों को धारण करने का आदेश-निर्देश देता है और योग हमारा सम्बन्ध एक ईश्वर से स्थापित करके हममें यह गुण भरता है। जहाँ ये सद्‌गुण आ जायें वहाँ तो रेगिस्तान भी हरे-भरे बग़ीचे का रूप धारण कर लेते हैं और दरिद्रता तथा दुःख नहीं रह सकते। अतः निश्चय ही ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग, जिनकी शिक्षा स्वयं भगवान् ही, गीता में किये वचन के अनुसार, धर्म-ग्लानि के समय देते हैं, के द्वारा ही इन समस्याओं का हल सम्भव है।

शिक्षा की अध्यात्म अभिमुखता

ब्र० कु० डॉ० हरीश शुक्ल, पाटन

आज का शिक्षा-जगत लक्षविहीनता, अज्ञानता जनित भौतिकता की अंधी दौड़, अनीति, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन आदि की विकृत तरंगों से आक्रांत है, परिणाम स्वरूप वास्तविक जीवन धारा चुकती जा रही है। नींद में सोये आदमी को पता नहीं होता कि मैं कौन हूँ? क्या हूँ! और कहाँ से आया हूँ? आज की शिक्षा हमारा परिचय जीवन के मात्र डाल पात से कराती है, बाहर से ही कराती है—शरीर से और शरीर के संबंधों से कराती है। वस्तुतः शरीर से बिल्कुल विपरीत और उलटा है जीवन का असली राज़। वृक्ष का जीवन उसकी जड़ों में है और जड़ें बिल-कुल उपेक्षित हैं। मैं कुछ हूँ—शरीर से भिन्न और अलग—इसका हमें कोई बोध नहीं हो पाता। सत्य भीतर है, शक्ति, जीवन की सारी क्षमता और सुगंध तो भीतर है। आत्मा भीतर है, बाहर तो मात्र उसकी अभिव्यक्ति है। आज की शिक्षा इस अभिव्यक्ति—छाया को ही जीवन मान कर चल रही है। परिणाम स्वरूप आज का शिक्षार्थी मरे-मरे, डरे-डरे जीने का उपक्रम कर रहा है—मरणधर्मा व्यक्तित्व को प्रोत्साहन मिल रहा है। ऐसे मरण धर्मा व्यक्तित्व से किस चारित्रिक ऊँचाई की अपेक्षा की जा सकती है? कभी दुनिया का चरित्र ऊँचा था तो एक मात्र कुछ आत्म-अनुभूति सम्पन्न व्यक्तियों की सुगंध के कारण ही।

आज के विद्यार्थी में व्याप्त निराशा, हताशा, अनास्था चरित्रहीनता और अनुशासनहीनता का वास्तविक कारण विज्ञान सम्मत सच्ची आध्यात्मिकता—असाम्प्रदायिक धार्मिकता का अभाव है। उन्हें अध्यात्म अभिमुख कर उनमें तेजस्विता, चरित्र बल, नैतिक बल एवं आत्मबल जगाया जा सकता है और उनकी शक्तियों को विधायक दिशा की ओर उत्प्रेरित कर देश व विश्व से अंधश्रद्धा, रूढ़िगत परम्पराओं, अंधविश्वासों एवं अज्ञानता जनित तन-मन की अस्वच्छता का उन्मूलन कर एक स्वस्थ, सुखी एवं शांत समाज का निर्माण किया जा सकता है।

सन् ८२ से आज तक के सभी शिक्षा आयोगों ने भी शिक्षा में आध्यात्मिकता की अनिवार्यता स्वीकार की है। गांधीजी ने भी शिक्षा के लिए व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता को सबसे बड़ा शर्त माना था, कवीन्द्र रवीन्द्र और डा० राधाकृष्णन् जी ने भी यही घोषणा की थी कि आध्यात्मिक पुनरुत्थान के बिना वैज्ञानिक उपलब्धियाँ विनाश का कारण बनेंगी। आज इसकी प्रत्यक्षता और यथार्थता साकार रूप लेती स्पष्ट दिखाई दे रही है। हिन्दी के अमर साहित्यकार प्रेमचन्द ने भी यही कहा था—शिक्षा सर्वांगपूर्ण हो, जिसमें मन, बुद्धि, चरित्र और देह सभी के विकास का अवसर मिले। वह शिक्षा जो सिर्फ अक्ल तक ही रह जाय अधूरी है।" शिक्षा का उद्देश्य ही ऊँचे चरित्र का निर्माण है—(Education is the development of good moral charactor.) क्या शिक्षा ने इस उद्देश्य की पूर्ति की है? यदि नहीं तो शिक्षा का यह सूक्ष्म व्यवसाय बड़े घाटे में चल रहा है। और यदि घाटा स्पष्ट है तो इसे चलाये रखने में कौन-सी बुद्धिमानी?

आप इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय और इससे सलंग्न देश-विदेश के १४०० सेवा केन्द्रों की तरफ नजर उठाइये—आप देखेंगे यहाँ सर्वांगपूर्ण शिक्षा का सुन्दर आयोजन है तथा शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र निर्माण—देव सुलभ गुणों की धारणा एवं रूहानी सेवा की सुगंध फैलाने की स्वैच्छिक उत्कंठा है। इस वातावरण के प्रकम्पनों से परिपूर्ण, हर्षित, प्रसन्न आत्माएँ जीवन की वास्तविकता एवं यथार्थता का संदेश स्वतः दे जाती हैं। यहाँ शिक्षा

अध्यात्म अभिमुख है। अध्यात्म अभिमुखता की सुगंध और परिणाम आप स्वतः भी अनुभव कर रहे हैं परन्तु मैं आत्मा दोनों प्रकार की शिक्षाओं का तटस्थ दृष्टा एवं भोक्ता हूँ, अतः इस विश्व विद्यालय की प्रेरक एवं सफल चैतन्य प्रयोगों से परिपूर्ण कुछ विशिष्टताओं का निर्देश अवश्य करूँगा।

यहाँ शिक्षा का केन्द्र है—प्रेम। सीखने के लिए चाहिए विनम्रता, निरअहंकारिता, प्रतियोगिता नहीं। जिस विषय को हम सीखना चाहते हैं, उसके प्रति तल्लीनता, आनंद-प्रेम आवश्यक है। प्रेम के बिना सीखना संभव नहीं। 'बाबा' भगवान हमें सिखाते हैं—नम्रता का अवतार बन जाओ। 'ईश्वरीय स्नेह हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' तो भिखारी से अधिकारी बन गये। प्रत्येक आत्मा के लिए आवश्यक चीज स्नेह ही है। जीवन में स्नेह नहीं तो जीवन नीरस अनुभव करते हैं। स्नेह इतनी ऊँची वस्तु है तभी तो आज के साधारण लोग स्नेह को ही भगवान मानते हैं। प्यार ही परमात्मा है वा परमात्मा ही प्यार है।

परमात्मा बाप सद्गुरु और शिक्षक बन कर सृष्टि पर आये हैं तो उन्होंने सभी बच्चों को प्रैक्टीकल जीवन में साकार स्वरूप से स्नेह दिया है, दे रहे हैं—तब अनुभव नहीं होते भी यही समझते कि स्नेह ही परमात्मा है। तो परमात्मा बाप की पहली देन स्नेह है। स्नेह ने हम सबको नया जन्म दिया है। स्नेह की पालना ने हम सबको ईश्वरीय सेवा के योग्य बनाया है। स्नेह ने सहज-योगी, कर्म योगी, स्वतः योगी बनाया है। स्नेह ने हद के त्याग को भाग्य अनुभव कराया है। त्याग नहीं भाग्य है—यह अनुभव सच्चे स्नेह ने कराया। इसी स्नेह के आधार पर किसी भी प्रकार के तूफान ईश्वरीय तोहफा अनुभव होते हैं। स्नेह के आधार पर मुश्किल को अति सहज अनुभव करते हैं। स्नेह से ही सदा साथ के अनुभव के कारण सदा समर्थ बना दिया। जो इस स्नेह को जानते, वही महान् बन जाते। ऐसी प्रेम पूर्ण शिक्षा से ही एक पूर्णता और आनंद का अनुभव होता है। हाँ, तो महत्वाकांक्षा नहीं, विकास। प्रतियोगिता नहीं प्रेम। दूसरों के साथ संघर्ष नहीं, वरन् स्वयं की आत्मा का जागरण। ऐसी शिक्षा ही सम्यक शिक्षा है। ऐसी शिक्षा से कामों और चीजों के साथ जो पद-प्रतिष्ठा है, वह समाप्त हो जाती है। एक आदमी रोटी बनाता, एक सफाई करता, एक कपड़े सीता या सुथारी काम करता—लेख लिखता वा भाषण करता—इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह सभी जिन्दगी को मिल-जुल कर बना रहे हैं, जीवन में सभी की जरूरत है। कोई किसी से कम नहीं, पद में किसी से कोई नीचा-ऊँचा नहीं। जीवन एक सहयोग है। प्रश्न यह नहीं कि कौन क्या करता, प्रश्न यह है कि कौन कैसे करता है!" मैं अपने मीठे बाबा-भगवान के लिए कर रहा हूँ" तो कर्म में प्रेम, शुभ चिंतना प्रस्फुटित होती—यही कर्मयोग बन जाता। क्या आप इस प्रकार के कर्मयोग का साक्षात्कार इस जीवंत शिक्षण कर्म भूमि में नहीं करते? आप अवश्य मिलिये—परिचय कीजिये—विक्रम युनि० का स्वर्णपदक विजेता एम० एस० सी० राजयोगी आत्म प्रकाश जी से, जो आपको रसोईघर में बड़े प्रेम से—परमात्मा की याद में परमात्मा के लिए तथा आपके लिए भी रसोई बनाते नजर आयेंगे।

इस प्रकार हम सब एक बाबा के बच्चे हैं, बाबा हमको प्यार से पढ़ाता—ऐसा प्यार से पढ़ाता जो शिव बाबा से हमारी रग जुट जाती है। एक-एक महावाक्य सूत्र बन रग रग में प्रवेश कर जाता। हमें भी बाबा अपने जैसा ही शिक्षक बनाता। अधरा शिक्षक नहीं। शिक्षक के लिए भी पास सर्टिफिकेट (प्रमाण पत्र) चाहिए, नहीं तो औरों की जिन्दगी खतरे में पड़ जाती। दूसरों को पढ़ाना माना उसे रोग-शोक से छुड़ाना।

मनुष्य का जीवन तीन के हाथों में होता है—शिक्षक, डाक्टर और वकील। बाबा हमें टीचर बन तीनों बनाते और कहते हैं—टीचर बने हो तो

अच्छी रीति पढ़ो और पढ़ाओ। डॉक्टर बने हो तो किसी की नब्ज देखकर समझ जाओ इसको क्या बीमारी है। अच्छे होशियार डॉक्टर बनो। पेशेन्ट को समझकर पेशेन्स (धीरज) दो। वकील बने हो तो पूरे कानन-मर्यादाओं को बुद्धि में रखो। अच्छा वकील वह जिसका केस हार में न जाए। हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं, तो अच्छी रीति पढ़ना है। लक्ष्य स्पष्ट और समक्ष है।

बाबा हमें अनेक बार मीठी शिक्षाएँ देते कहते—बच्चे-स्वीट बनो। कभी तीखे शब्द मुख से न बोलो। हम ईश्वरीय संतान हैं, ऊँचे ते ऊँचे भगवान के बच्चे हैं तो हमारा खाना, पीना, पढ़ना, सोना, बोलना सब रायल चाहिए। तो बाबा हमें कम बोलना, थोड़ा बोलना, संभलकर बोलना और बाबा सम मीठा बोलना सिखाते हैं और अपनी विशिष्ट शक्तियों और वरदानों का अधिकारी बना देते हैं।

यह हैं बाप-परमात्मा की मीठी-२ शिक्षाएँ और करामात जिससे पतित पावन बन जाता है। मनुष्य देवता बन जाता है, उसका आमूल परिवर्तन हो जाता है।

प्रेम, शान्ति, संतुष्टता और उमंग के वातावरण में ही हमारी सार्वत्रिक सफलता समाई है परन्तु आज प्रत्येक क्षेत्र में अशांति की जड़ें गहरी उतरती जा रही हैं। इसका व्यावहारिक हल आज किसी को नहीं मिल रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रश्न यही है कि धर्म एवं आध्यात्मिक शिक्षा को व्यावहारिक रूप कैसे दिया जाय? वस्तुतः साम्प्रदायिकता धर्म नहीं। धार्मिक शिक्षा के लिए पहली शर्त धर्म की सम्प्रदायों से मुक्ति आवश्यक है। जो धर्म मानव को मानव से तोड़ दे, वह परमात्मा से कैसे जोड़ सकता है? धर्म अनेक नहीं—एक है और वह है—धारणा—जीवन रुपांतरण। सत्य, अहिंसा, पवित्रता, धैर्यता, सहनशीलता आदि दिव्य गुणों की धारणा के लिए किसी विशेष धर्म की दीक्षा की आवश्यकता नहीं। हाँ, निश्चयात्मक ज्ञान की आवश्यकता अनिवार्य है, जिसके सत्र हैं—

१. शरीर और आत्मा की भिन्नता
२. आत्मा का सच्चा पिता परमात्मा
३. सृष्टि एक नाटक है
४. स्वस्वरूप का ज्ञान कराने का एक मात्र साधन सहज राजयोग है।

अध्यात्म अभिमुख शिक्षा का केन्द्र यही हो और बच्चों को सिखाया जाए कि तुम मानव हो, एक चेतन आत्मा हो—हिन्दू-मुसलमान वा सिक्ख नहीं हो, तो एक नया देश, नया विश्व पैदा होगा। ऐसी शिक्षा से ऐसे स्वस्थ मानव पैदा होंगे जो न हिन्दू हैं, न मुसलमान, न जैन, न सिक्ख—वह मात्र धार्मिक, प्रशांत—एक परमात्मा की अमर संतान होंगे और विश्व मानव के साथ आपस में भ्रातृत्व की विशुद्ध प्रेम भावना से जुड़े होंगे।

इस प्रकार की शिक्षा से एक सहज स्फर्त विवेक पैदा होता है जिसके प्रकाश में प्रथम तो कर्म स्वयं ही महान बन जाता है। भले वह छोटा हो। दूसरा कर्तव्य और अधिकार के प्रति समभावना का उदय होता है। जिससे उसे स्पष्ट दिखाई पड़ता है—कि कर्तव्य और अधिकार का संतुलन ही सफलता है, सम्पन्नता है। सफलता और सम्पन्नता की व्याख्या भी बदल जाती है। वास्तव में शरीर तथा शरीर की कर्मेन्द्रियों की मालिक चैतन्य शक्ति 'आत्मा' दोनों की सम्पन्नता आवश्यक है। दोनों के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की समस्याएँ हल होनी चाहिए। आत्मा को भी शुद्ध संकल्पों का ही पोषणयुक्त भोजन मिले यह आवश्यक है ताकि अशुद्ध संकल्पों के भोजन से ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध आदि की भावनाएँ समाप्त हों तथा शुद्ध संकल्पों की खुशी-खुमारी की झलक चेहरे पर दिखाई दे। बाह्य अशुद्ध तमोप्रधान वातावरण से बचने के लिए आत्मा को योग-ध्यान रूपी कवच (वस्त्र) की भी नितांत आवश्यकता है। योग अर्थात् ईश्वरीय याद का कवच ही काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार के प्रहारों से आत्मा की रक्षा करता है। तीसरी आवश्यकता मकान की है—आत्मा का घर—परमधाम

की स्मृति भी आवश्यक है ताकि विद्यार्थी अपने को सृष्टि रूपी नाटक का एक अभिनेता समझ अपना अभिनय कुशलता, स्वस्थता एवं निर्लिप्तता से कर सके।

सम्पन्नता का चौथा आधार ऊँची शिक्षा—प्रमाणपत्रों की शिक्षा के साथ-साथ चरित्र निर्माण का ज्ञान तथा नैतिक शिक्षा की भी उतनी ही आवश्यकता है, जिससे जीवन में दिव्यता का उदय हो। इस प्रकार शारीरिक सम्पन्नता के साथ जो व्यक्ति आत्मा से भी सम्पन्न है, वही सच्चे अर्थों में सम्पन्न है।

तीसरी बात अध्यात्म अभिमुख शिक्षार्थी किसी को जन्म वा कर्म से दलित अथवा पिछड़ा हुआ नहीं मान सकता। दलित, पिछड़े तो वे हैं जो शराब, जुआ, चोरी धूम्रपान, तम्बाकू आदि व्यसनों के दास बन अपने तन, मन, धन, समय, शक्ति का अपव्यय करते हैं और अपने ही घर में दुःख और अशांति फैलाते रहते हैं। इसके अतिरिक्त लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ तथा अन्याय द्वारा अशांति फैलाकर समाज एवं राष्ट्र द्रोह करने वाले पिछड़े हैं, दलित हैं, दरिद्र हैं तथा शद्र हैं।

चौथी बात शिक्षा काल में मित्रों का वास्तविक परिचय भी अत्यावश्यक है। वास्तव में उच्च मानवीय गुण ही हमारे मित्र हैं जो प्रत्येक कार्य में शांति, सफलता और समृद्धि को आमंत्रित करते हैं। प्रेम, शांति, पवित्रता, धैर्य, सहनशीलता, निस्वार्थभाव, सहयोग, निष्ठा, उत्साह आदि मित्रों की सहज कृपा प्रत्येक व्यक्ति पा सकता है। यदि वह अपने को शरीर न समझ आत्मा समझे और सदैव इस स्मृति में रहे कि मैं आत्मा शांत स्वरूप, प्रेम, आनंद, पवित्रता, शक्ति रूप हूँ। इस सृष्टि मंच पर मैं अपना पार्ट-अभिनय करने आई हूँ। मुझे सभी से प्रेम और आदर से व्यवहार करना है तथा मुझ जो कार्य सौंपा गया है उसे निष्ठा एवं निर्लिप्त भाव से पूर्ण करना है।

पांचवी बात परमात्म-स्मृति, योग वा एकाग्रता की अनुभूति करना है। योग द्वारा प्राप्त एकाग्रता को शक्ति से विद्यार्थी अपना विद्यार्थी काल उज्ज्वल बना सकता है। परमपिता परमात्मा पिताओं का पिता है, देवों का देव और सर्वोपरि है, वह समस्त जागतिक विधान का एकमात्र ज्ञाता है, जो अकर्ता, अभोक्ता परमधाम निवासी ज्योति-बिन्दु स्वरूप है—ऐसे परमपिता परमात्मा की स्नेहयुक्त याद ही—स्मृति ही योग है। आत्मा का परमात्मा से सम्पर्क जोड़ना, मिलन मनाना ही राजयोग है, जो प्रत्येक कर्मों में श्रेष्ठता लाकर श्रेष्ठ देवोपम जीवन का अधिकारी बनाता है।

साम्प्रत समय तो निश्चय ही इस भागवत् सत्ता किंवा परमात्मा के अवतरण और प्रकटीकरण का परम सौभाग्यशाली समय है। वही परमात्मा पिता—मीठा 'बाबा' शिक्षा द्वारा जीवन जीने की कला सिखा रहे हैं। वही पिता का प्यार लुटा रहा है, वही शिक्षक बन शिक्षा रूपी ज्ञान रत्नों से हमारी झोली भर रहे हैं—जीवन का श्रेष्ठ शृंगार कर रहे हैं और गुरु बन कर जीवन रूपांतरित कर दिव्य जीवन का वरदान दे रहे हैं। यह है एक आदर्श शिक्षा संस्था, जो स्वर्ग के द्वार खोल रही है। इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की शिक्षा-प्रणाली से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। शिक्षा-शास्त्रियों एवं राजनीतिज्ञों के लिए यह संस्था एक चुनौती है—मार्गदर्शना का प्रेरक पावन केन्द्र है, जहाँ धरती पर स्वर्ग उतारने की कला में प्रत्येक व्यक्ति-शिक्षार्थी को निपुण किया जा रहा है। गुप्तजी के साकेत महाकाव्य के राम का भी यही पुरुषार्थ था—

संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया।
इस भूतल को स्वर्ग बनाने आया॥

धरती पर स्वर्ग उतारना ही शिक्षा का सृजनात्मक ध्येय है, शिक्षा द्वारा ही निरा पशु-मानव दिव्य-मानव बन सकता है और यह कार्य अध्यात्म अभिमुख शिक्षा द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है। इसके लिए इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के शिक्षा-प्रयोग सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रकाश-स्तंभ बन सकते हैं।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

युवा पद यात्रा के आयोजन

माउण्ट आबू—अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष में ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय पाण्डव भवन से ९ युवक सिरोही जिले की जनता को ईश्वरीय सन्देश देने एवं आध्यात्मिक जागृति लाने हेतु तीन दिन के लिए पद यात्रा पर निकले। ८ मई को प्रातः ५ बजे योगाभ्यास के पश्चात ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी जी तथा अन्य मुख्य भाई बहिनों ने इन पदयात्रियों को तिलक दे भावभीनी विदाई दी। पदयात्रियों के हाथ में युवावर्ग से सम्बन्धित स्लोगन तथा शिव बाबा के झण्डे थे। पदयात्री नारे लगाते हुए आगे बढ़े तो साथ-साथ विद्यालय के मुख्य प्रवक्ता तथा साहित्य लेखक ब्र० कु० जगदीश जी ने देलवाड़ा मन्दिर तक साथ चलकर पदयात्रियों को प्रोत्साहित किया।

इन्दौर—प्राप्त समाचार के अनुसार २५ अप्रैल ८५ को इन्दौर से कम्पेल गांव तक ३० कि० मी० की एक दिवसीय आध्यात्मिक जागृति पदयात्रा का आयोजन किया गया। यह पदयात्रा ओम शान्ति भवन, इन्दौर से प्रातः ५.०० बजे प्रारम्भ हुई। जिसमें ७० भाई बहिनों ने भाग लिया। इस पदयात्रा में इन्दौर जोन की मुख्य शिक्षिका ब्र० कु० आरती बहन भी सम्मिलित थीं। सर्वप्रथम पदयात्रियों को ब्र० कु० किरण बहिन ने तिलक दिया। क्षेत्रिय निर्देशक ब्र० कु० ओमप्रकाश जी, व बाल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी विमल मित्तल जी ने शुभ कामना सन्देश देते हुए परमात्मा शिव का झण्डा पदयात्रियों को दिया एवं पदयात्रियों की सफलता की पूर्वाशा में बधाई देते हुए विदाई दी। यह पदयात्री सफेद पोश में कतारबद्ध चलते हुए ऐसे नजर आ रहे थे जैसे हंसों की पांति चल रही है। पदयात्रियों के हाथ में युवा वर्ष से सम्बन्धित निम्न सलोगन लिखी हुई तख्तियाँ थीं। १—युवा पीढ़ी, भविष्य की सीढ़ी। २—युवा बदलेगा, जग बदलेगा ३—युवा शक्ति की क्रांति घर-घर में हो सुख और शान्ति। ४—युवा शक्ति की है यह निशानी—त्यागी तपस्वी और बलिदानी। ५—मांस मदिरा और शराब मिटा दो, युवकों इस अभिशाप को। आदि-आदि।

मद्रास—सेवाकेन्द्र की ओर से प्राप्त समाचार के अनुसार "भारत एकता युवा पद यात्रा" ९ जून १९८५ को कन्याकुमारी से दिल्ली के लिए प्रारम्भ हो रही है। इस अवसर पर ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी सूर्य उदय के समय प्रातः ६ बजे तीन समुद्रों के बीच पर भव्य समारोह के साथ पदयात्रियों को सफलता का टीका देते हुए, शुभारम्भ करेंगी। इस शुभ अवसर पर वहां के मुख्य मंत्री को भी पधारने का आमंत्रण दिया गया है। इस पद यात्रा के मार्ग का भलीभांति सर्वे किया जा चुका है। पद यात्रियों का स्वागत तथा पूरा-पूरा प्रबन्ध ग्राम निवासी स्वयं करेंगे ऐसा उन्होंने आश्वासन दिया है। तमिलनाडु के सेवाकेन्द्र २०० किलोमीटर की एरिया में आने वाले गांवों में पदयात्रियों के ठहरने वा ईश्वरीय सेवा करने का प्रबन्ध करेंगे।

कोल्हापुर—प्राप्त समाचार के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के निमित्त एक विशाल शान्ति यात्रा का आयोजन किया गया। जो शान्ति यात्रा लगभग ९ गांवों में ईश्वरीय सन्देश देने गई। जिसमें ३०० भाई बहिनों ने भाग लिया। सभी के हाथों में सुन्दर स्लोगन्स की तख्तियां थीं। इस शान्ति यात्रा के साथ-साथ एक चैतन्य झांकी भी सजाई गई थी। गांव निवासियों ने अपने-अपने स्थान पर सभी का स्वागत किया। शान्ति यात्रा का उद्घाटन सुगर फैक्टरी के डायरेक्टर ने किया। तथा समाप्ति सांगरूक गांव के सरपंच द्वारा हुई। इस यात्रा के फलस्वरूप गांव-गांव से उपसेवाकेन्द्र खोलने के निमन्त्रण प्राप्त हो रहे हैं।

चण्डीगढ़—प्राप्त समाचार के अनुसार ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कुछ भाई बहिनों का एक समूह दलाईलामा जी के निवास स्थान पर उनसे मिलने गया तथा उन्हें

१९८५ वर्ष में हुए तीसरे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का विस्तृत समाचार सुनाया एवं युवा वर्ष के अन्तर्गत ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा होने वाली युवा पद यात्रा के माध्यम से गांव-गांव में ईश्वरीय सेवा की विशाल योजना के बारे में पूरी जानकारी दी। तो आप इस ग्राम उत्थान पद यात्रा का समाचार सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और आश्चर्य से कहा "रीयली वन्डरफुल"। आपने आगे कहा कि सचमुच यह यात्रा एतिहासिक यात्रा होगी जिससे गांव-गांव की भोली भाली जनता को ईश्वर का पैगाम मिलेगा और आपका जो "पवित्र बनो-योगी बनो" का शुभ सन्देश है वह जन-जन तक पहुंचेगा। उन्होंने अपनी शुभ कामनायें देते हुए कहा कि मैं इस महान कार्य में भाग ले सकूंगा या नहीं लेकिन मेरी शुभ कामनायें सदा आप सबके साथ हैं। इस महान योजना के लिए आयोजको को बधाई दी। अन्त में उन्हें ईश्वरीय साहित्य तथा बैज दिया गया। उन्होंने दादी जी के लिए दो पुस्तके और सरोपा (सफेद स्कार्फ) भेंट किया।

सहारनपुर—प्राप्त समाचार के अनुसार सेवाकेन्द्र पर नगर के विशिष्ट व्यक्तियों का एक स्नेह मिलन आयोजित किया गया—आमन्त्रित लोगों के समक्ष ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सह प्रशासिका दादी चन्द्रमणी जी ने "विश्व शान्ति और मानवीय सम्बन्ध" नामक विषय पर अपना अनुभवयुक्त एवं सारगर्भित प्रवचन किया। भ्राता अमीरचन्द जी ने युवा वर्ष के दौरान विश्व विद्यालय द्वारा विश्व स्तर पर की जा रही सेवाओं से सभी को अवगत कराया। कार्यक्रम के अन्त में विश्व शान्ति महा-सम्मेलन की वीडियो फिल्म भी दिखाई गई। दूसरे दिन रोटरी क्लब के सदस्यों के समक्ष दादी चन्द्रमणी जी ने प्रवचन किया।

बम्बई—समाचार मिला है कि बम्बई में लाला लाजपत राय कालेज में संत तुकड़ों जी महाराज अमृत महोत्सव के उपलक्ष में उनकी ही तरफ से एक त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था जिसमें एक दिन वक्तव्य-स्पर्धा भी रखी गई थी। स्पर्धा का विषय था—"देश निर्माण के लिए युवक व युवतियों का योगदान"। इस स्पर्धा में सान्ताक्रूज सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र० कु० मीरा बहन और कमलेश बहन को सम्मिलित होने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ। इस वक्तव्य स्पर्धा में अन्य १४ युवक युवतियों ने भाग लिया। परीक्षक मण्डल में कालेज के प्रोफेसर्स थे। ब्र० कु० मीरा बहन वा कमलेश बहन को फर्स्ट प्राइज मिला।

त्रिवेन्द्रम—प्राप्त समाचार के अनुसार अयोध्या नगर कल्याण मंडप में ४ दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसमें ५०० आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला। कुछ आत्माओं ने राजयोग शिविर तथा साप्ताहिक पाठ्यक्रम भी किया। इसके इलावा वहां के प्रसिद्ध पदमनाभस्वामी के मन्दिर में आयोजित एक महोत्सव पर उपस्थित हजारों आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश के पर्चे दिये गये।

बुरहानपुर—समाचार मिला है कि गांव-गांव में ईश्वरीय सन्देश देने के लिए सेवाकेन्द्र की ओर से एक "साईकिल यात्रा" का आयोजन किया गया। जिसमें १७ कुमार भाइयों ने भाग लिया। सभी साईकिलों पर परमात्मा शिव के छोटे झण्डे तथा चित्र लगे हुए थे। साथ में आध्यात्मिक गीत भी बज रहे थे। यह यात्रा केराल्हा, लोनी, बहादरपुर, रावेर तथा अन्य कई छोटे-छोटे गांवों में से गई, हर स्थान पर इनका स्वागत हुआ तथा सभी को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। अभी ८-१० गांवों से आध्यात्मिक प्रदर्शनी के निमन्त्रण प्राप्त हुए हैं। सभी जगह युवा प्रदर्शनी के आयोजन किये जायेंगे।

पश्चिम-विहार—(नई दिल्ली) में राजयोग शिक्षा केन्द्र व आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन आदरणीय दादी जानकी जी एवं दादी हृदयमोहिनी जी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्थानीय संसद सदस्य चौधरी भरतसिंह जी पधारे थे। उन्होंने संग्रहालय का अवलोकन किया तथा संस्था द्वारा की जा रही आध्यात्मिक सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की और सेवाओं को आगे बढ़ाने में सहयोग देने का आश्वासन दिया।

हाथरस—ग्राम सेवा अभियान के अन्तर्गत हाथरस सेवा-केन्द्र के हसौना उपकेन्द्र के आस-पास सघन कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। ग्रामों में प्रदर्शनियां एवं ग्राम गोष्ठियों के आयोजन किए जा रहे हैं। अब तक दो मास के अन्तर्गत हसौता, मनीपुर, मिर्जापुर, दौलतपुर, भदरोई, हसगढ़ी,

दमौहा, दीपपुर, चांदपुर आदि ४२ ग्रामों में कार्यक्रम सम्पन्न हो चुके हैं।

मोरबी—सेवाकेन्द्र की ओर से गांव-गांव में ईश्वरीय सन्देश देने हेतु प्रदर्शनी, योग शिविर, प्रोजेक्टर शो का आयोजन किया गया राजपुर, चाचापुर, खानपुर, नशीब पर इत्यादि गांवों में सेवा का आयोजन किया गया।

मुजफ्फरनगर—प्राप्त समाचार के अनुसार मुजफ्फरनगर के आसपास के करीब १४ गांवों में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनियों तथा शिव दर्शन प्रदर्शनियों के आयोजन बहुत धूमधाम से किये जा चुके हैं। जिनका लाभ हजारों की संख्या में ग्रामीण जनता ने बहुत रुची से लिया। उन्हें चरित्रवान जीवन बनाने की प्रेरणा देते हुए काम-क्रोध आदि विकारों तथा नशीले पदार्थों को छोड़ने की प्रतिज्ञायें कराई गईं। शहर से कुछ दूर कस्बा बुढ़ाना में "दैवी माता" के मेले पर विशेष तीन दिन की प्रदर्शनी द्वारा हजारों आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन मेला कमेटी के प्रधान रघुनंदन सिंह त्यागी ने किया।

कठुआ—समाचार मिला है कि कठुआ जिले में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन २१ अप्रैल से ३० अप्रैल तक किया गया। जिसका उद्घाटन जिला एण्ड सेशन जज ने टेप काटकर किया। डेढ़ घण्टे तक मेला देखने के पश्चात जज महोदय ने ईश्वरीय विश्व विद्यालय की महान सेवाओं की प्रशंसा की और कहा कि ऐसी संस्थाओं को सरकार की ओर से पूरा सहयोग मिलना चाहिए ताकि भटकते हुए मानव को कहीं ठौर मिल सके।

दिल्ली—प्राप्त समाचार के अनुसार दिल्ली जोन की निर्देशिका दादी गुल्जार जी विदेशी राजयोगी भाई बहिनों के विशेष आमन्त्रण पर अढ़ाई मास के लिए ईश्वरीय सेवा हेतु १४ जून को विदेश में जा रही हैं। आप अपनी इस यात्रा के दौरान अनेक सार्वजनिक सभाओं को भी सम्बोधित करेंगी तथा नये पुराने राजयोगी भाई बहिनों को अपने ५० वर्ष के तपस्वी जीवन के अनुभवों से लाभान्वित करेंगी।

राजोरी—प्राप्त समाचार के लनुसार राजोरी में ३१ मार्च को एक नये आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन नव निर्मित "शिव शक्ति भवन" में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वजनिक सम्मेलन, शोभा यात्रा का कार्यक्रम रखा गया। राजोरी के इतिहास में पहली बार ऐसी विशाल शोभा यात्रा इस अवसर पर निकाली गई जिससे स्थानीय जनता में कुछ जागृति आई। इस शोभा यात्रा में जम्मू कश्मीर के उधमपुर, जम्मू, रामनगर, बसोली, साम्बा, पून्छ, सुन्दरवती आदि स्थानों के राजयोगी भाई बहनो ने भाग लिया। संग्रहालय का उद्घाटन डी० सी० साहेब ने किया।

पुरी—समाचार मिला है कि पुरी सेवाकेन्द्र द्वारा आस-पास के अनेक गांवों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा स्लाईड शो द्वारा जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने की सेवायें चल रही हैं। पुरी से ५० कि० मी० दूर घोरड़िया गांव के मेला मैदान में विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी द्वारा ६ हजार आत्माओं को सन्देश मिला।

खेडब्रह्मा (गुजरात)— प्राप्त समाचार के अनुसार इन्टर पी० टी० सी० कालेज में १७१ कन्याओं के लिए ४ दिवसीय राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। प्रवचनों तथा योगानुभूति द्वारा सभी को दिव्य जीवन की प्रेरणा दी गई। इसके अलावा गांव-गांव में प्रदर्शनी, देवियों की चैतन्य झांकी तथा प्रवचन के कार्यक्रम रखे गये।

हिसार—सेवाकेन्द्र से प्राप्त समाचार के अनुसार हिसार में एक चिकित्सक वर्ग सम्मेलन का आयोजन दादी चन्द्रमणी जी की अध्यक्षता में किया गया जिसमें शहर के ५५ प्रतिष्ठित चिकित्सकों ने भाग लिया। इस अवसर पर पंजाब जोन के राजयोगी चिकित्सक भी उपस्थित थे—सम्मेलन में राजयोग प्रणाली द्वारा चिकित्सा क्षेत्र में हुई सफलताओं पर प्रकाश डाला गया। इसी प्रकार सेवाकेन्द्र द्वारा एक अन्य सम्मेलन का आयोजन किया गया—जिसका विषय था "राजयोग द्वारा परिवर्तन" जिसमें ३०० प्रतिष्ठित आमन्त्रित व्यक्तियों ने भाग लिया। दादी चन्द्रमणी जी ने राजयोग पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राजयोग द्वारा ही हम अपने मन वा इन्द्रियों पर नियन्त्रण प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर हरियाणा राजकवि भ्राता परमानंद जी ने सुन्दर आध्या-

त्मिक कविताओं द्वारा सबका मनोरंजन किया। हिसार की बखाला ब्रांच में "मानसिक शान्ति सम्मेलन" का आयोजन किया गया जिसमें २०० भाई बहिन उपस्थित थे। हरियाणा कृषि वि० वि० के किसान मेले में दो दिन की औद्योगिक एवं चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी का शुभारम्भ यहां के उपकुलपति भ्राता एल० डी० कटारिया द्वारा हुआ। लगभग ६ हजार आत्माओं ने समझने में रुची ली। इसके अतिरिक्त लगभग ७ स्थानों पर प्रदर्शनियों के आयोजन द्वारा ८ हजार आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। मार्च अप्रैल मास में २० व्यक्तियों ने साप्ताहिक कोस किया और अभी नित्य ज्ञान स्नान कर रहे हैं।

विदेश समाचार

पोप से ब्र० कु० दादी जानकी जी की भेंट

रोम—समाचार मिला है कि ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सह मुख्यप्रशासिका दादी जानकी जी और ब्र० कु० जयन्ती बहन जी ने रोम में लगभग ५० हजार भाई बहिनों। की एक विशाल सभा में कैथोलिक चर्च के मुख्य पोप से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान उन्होंने पोप को ईश्वरीय निमन्त्रण देते हुए पौलिश भाषा में छपा हुआ ईश्वरीय सन्देश दिया जिसे उन्होंने ध्यान पूर्वक पढ़ा। वहां के मुख्य बिशप तथा सरमन्स आदि से भी दादी जी की व्यक्तिगत मुलाकात हुई एवं ज्ञान की वार्तालाप भी चली। इसके पश्चात दादी जी ईटली में गई वहां पर आयोजित एक स्नेह मिलन में ७० प्रतिष्ठित व्यक्तियों को अपने अनुभवों से लाभान्वित किया। रोम में भी एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया था।

लण्डन—प्राप्त समाचार के अनुसार लण्डन सेवाकेन्द्र पर ऋषिकेश आश्रम के प्रमुख स्वामी विष्णु देवानंद जी अपने ४ अन्य शिष्यों के साथ पधारे। सर्वप्रथम दादी जानकी जी ने विद्यालय की ओर से आपका स्वागत किया। उन्हें ईश्वरीय विश्वविद्यालय की गतिविधियों से अवगत कराया गया। लगभग १५० राजयोगी भाई बहिनों से आपकी मुलाकात हुई। सायंकाल आप दूसरे सेवाकेन्द्र "बाबा भवन" में पधारे—जहाँ पर आपने अपना प्रवचन भी दिया। ब्रह्मा भोजन स्वीकार करने के पश्चात् आपको मुख्यालय (पाण्डव भवन) की स्लाईडस भी दिखाई गईं—जिसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। दादी जानकी जी से आपकी व्यक्तिगत मुलाकात हुई—जिसमें काफी समय तक ज्ञान वार्ता चली। इसके अलावा "वेलिंगबरो में" एक नया सेवाकेन्द्र खुलने का भी समाचार मिला है—जिसका उद्घाटन दादी जानकी जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। लण्डन सेवाकेन्द्र की इन्चार्च ब्र० कु० जयन्ती बहन का एक सप्ताह के लिए लैंगास में जाना हुआ। वहां पर विशेष कर सिन्धी समाज की ईश्वरीय सेवा हुई। नाईजीरिया के प्रमुख से भी आपका मिलना हुआ।

ग्याना—समाचार मिला है कि लण्डन सेवाकेन्द्र की निर्देशिका ब्र० कु० जयन्ती बहन ग्याना तथा ट्रीनीडाड में ईश्वरीय सेवार्थ जब पहुंची तो सर्व प्रथम ग्याना के प्राइम मिनिस्टर मिस्टर होयटे जी से आपका मिलना हुआ। आपने ब्र० कु० जयन्ती बहन का सहर्ष स्वागत किया और ईश्वरीय ज्ञान की काफी समय तक चर्चा हुई। जयन्ती बहन ने आपको सेवाकेन्द्र पर पधारने तथा राजयोग अभ्यास करने के लिए विशेष निमन्त्रण एवं साहित्य दिया। इसके बाद कैथोलिक चर्च के बिशप मिस्टर सिंग से लगभग एक घण्टे तक राजयोग पर गहरी चर्चा हुई और अन्त में योगानुभूति भी कमेन्ट्री सहित कराई गई। सायंकाल सेवाकेन्द्र पर एक स्नेह मिलन आयोजित किया गया जिसमें शहर के २६ प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। सर्वप्रथम ब्र० कु० जयन्ती बहन ने अपने समर्पित जीवन का अनुभव सुनाया।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No 10563/65-D, (E)—70